कर्मवीर

16 वाँ अंक

रेल इंजन कारखाना, जमालपुर

1998

वर्ष : 10

पूर्व रेलवे,
17, नेताजी सुभाष रोड
कलकत्ता– 700 001
Eastern Railway
17, Netaji Subhas Road
Calcutta - 700 001

एस. रामनाथन
महाप्रबन्धक
General Manager

शुभकामना सन्देश

यह जानकर मुझे बड़ी खुशी है कि जमालपुर कारखाने के स्थापना दिवस 8 फरवरी, 1998 को हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' के 16 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका-प्रकाशन हमारे अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए हिन्दी में लेखन-क्षमता के विकास का एक उत्तम साधन है। आशा है कि हमारे अधिकारी-कर्मचारी इस प्रकाशन में अपना भरपूर सहयोग देंगे और राजभाषा प्रयोग-प्रसार के लिंए उपयुक्त वातावरण तैयार करेंगे।

पत्रिका-प्रकाशन की सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

रामनाथन
(एस. रामनाथन)
महाप्रबन्धक

पूर्व रेलवे
Eastern Railway
17, नेताजी सुभाष रोड
17, Netaji Subhas Road
कलकत्ता / Calcutta } 700 001

रंजन तिवारी
मुख्य राजभाषा अधिकारी
Mukhya Rajbhasa Adhikari

शुभकामना सन्देश

जमालपुर कारखाने द्वारा अपने स्थापना दिवस 8 फरवरी, 1998 के अवसर पर हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' के 16 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है, इसके लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका के अब तक के अंक कारखाने के अधिकारियों-कर्मचारियों की लेखन-क्षमता एवं रुचि के सशक्त परिचायक रहे हैं। आशा है कि इस अंक में भी अधिक से अधिक भागीदारी के साथ और अधिक रुचिकर पाठ्य-सामग्री के दर्शन होंगे।

पत्रिका प्रकाशन की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(रंजन तिवारी)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
मुख्य कार्मिक अधिकारी (औ० सं०)

भारतीय रेल यांत्रिक
एवम् विद्युत अभियंत्रण संस्थान,
पूर्व रेलवे, जमालपुर : 811 214
GOVT. OF INDIA-MINISTRY OF RLYS.
Indian Railways Institute of mechanical
& Electrical Engg.
JAMALPUR - 811 214
TEL & FAX : 0091 - 6344 - 43184

प्रदीप कुमार
निदेशक

शुभकामना सन्देश

रेल इंजन कारखाना, पूर्व रेलवे, जमालपुर का राजभाषा विभाग हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' अंक- 16 का प्रकाशन कर रहा है। यह बहुत ही उत्साहवर्द्धक एवम् प्रसन्नता की बात है। मुझे आशा है कि 'कर्मवीर' के प्रकाशन से एक ओर जहाँ अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी लेखन प्रतिभा विकसित करने का अवसर मिलेगा, वहाँ दूसरी ओर हिन्दी में काम करने की उनकी अभिरुचि भी बढ़ेगी।

मेरी कामना है कि 'कर्मवीर' निरन्तर पल्लवित और पुष्पित हो।

(प्रदीप कुमार)
निदेशक

Locomotive Works, Eastern Railway
Jamalpur, Munger (Bihar) 811 214
Tel. : (91) 6344 - 43105,
Fax : (91) 6344 - 43205
रेल इंजन कारखाना,
पूर्व रेलवे, जमालपुर

निखिलेश जैन
मुख्य कारखाना प्रबन्धक
Chief Works Manager

शुभकामना सन्देश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि रेल इंजन कारखाना, जमालपुर का राजभाषा विभाग हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' अंक– 16 का प्रकाशन कर रहा है।

मुझे विश्वास है कि 'कर्मवीर' पत्रिका रेलों पर हिन्दी के प्रयोग–प्रसार में उत्साह पैदा करने और उनकी रचनात्मक प्रतिभा को उत्तरोत्तर बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही यह पत्रिका अन्य राष्ट्रीय प्रतिष्ठानों के लिए प्रेरणा स्रोत का भी माध्यम बनेगी।

'कर्मवीर' के सम्पादक मंडल को मेरी हार्दिक बधाई।

(निखिलेश जैन)

पूर्व रेलवे
Eastern Railway
17, नेताजी सुभाष रोड
17, Netaji Subhas Road
कलकत्ता
Calcutta } 700 001

बिरसा खलखो
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
Dy. Mukhya Rajbhasa Adhikari

शुभकामना सन्देश

यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि जमालपुर कारखाने की हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' के अगले अंक का प्रकाशन 8 फरवरी, 1998 को होने जा रहा है। हिन्दी-भाषी क्षेत्र स्थित जमालपुर कारखाने की इस पत्रिका से पूर्व रेलवे को बहुत आशाएँ हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि विविध विधाओं से युक्त यह प्रकाशन पाठकों के लिए उपयोगी और रुचिकर सिद्ध होगा।

पत्रिका प्रकाशन की सफलता हेतु मैं हृदय से कामना करता हूँ।

(बिरसा खलखो)
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

कर्मवीर

राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध

हिन्दी पत्रिका

वर्ष : 10

अंक : 16

कारखाना स्थापना दिवस अं

❑

संरक्षक :

निखिलेश जैन

मुख्य कारखाना प्रबंधक

पू. रे. जमालपुर

❑

संचालन समिति :

दिनेश चन्द्र शर्मा

उप-मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं

उप-मुख्य यांत्रिक इंजीनियर (क्रेन)

अशोक कुमार चौधरी

उप-मुख्य लेखा अधिकारी

पू. रे. जमालपुर

❑

सम्पादक :

विपुल रंजन पांडेय

निजी सचिव

एवं

राजभाषा अधिकारी

❑

सह-सम्पादक

मृत्युंजय कुमार झा

राजभाषा सहायक

❑

सम्पादन सहयोग :

राजकिशोर मंडल, रा० सहायक

कौशल किशोर शुक्ल, रा० सहायक

विजय कुमार मंडल, रा० सहायक

पृथ्वी राज मंडल, रा० सहायक

❑

वितरण निःशुक्ल

❑

पता :

राजभाषा विभाग

रेल इंजन कारखाना, पूर्व रेलवे

जमालपुर, मुंगेर

(बिहार) 811 214

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।
रेल प्रशासन या संपादक मंडल इनके लिए जिम्मेवार नहीं है।

सम्पादकीय

अपनी बात :

हिन्दी पत्रिका 'कर्मवीर' का प्रकाशन विगत 9 वर्षों से होता आ रहा है। इन वर्षों में प्रकाशित अन्य अंकों की शृंखला में 'कर्मवीर' का 16 वाँ अंक आपके हाथ में है। यद्यपि प्रत्येक अंक की अपनी कुछ खासियत एवं विशेषताएँ रही हैं, फिर भी इस पत्रिका को नये ढंग से संवारने की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। इसी को ध्यान में रखकर इस अंक को भी नये अंदाज एवं नये शक्ल में प्रकाशित करने की हमारी कोशिश लंगातार जारी है।

आज के समय में साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन बड़ा ही गुरुतर कार्य है। नयी-नयी दिक्कतें एवं कठिनाइयों से बच-बचाकर निकलते हुए 16 वें अंक के प्रकाशन का कार्य पूरा किया गया है। रेलों पर राजभाषा के लिए अनुकूल माहौल पैदा करना तथा सार्थक एवं उपयोगी वातावरण बनाना ही इस पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य है। हमारे सामने पत्रिका के हर अंक का प्रकाशन एक चुनौती भरा कार्य रहा है। ऐसा देखा जा रहा है कि पत्रिका के लिए रचनाओं का बड़ा ही अभाव रहता है। उपयोगी एवं रुचिकर सामग्रियों का अभाव एक बड़ी समस्या है। पाठकों से आग्रह है कि 'कर्मवीर' के लिए अपनी रचनाएँ भेजें ताकि इसके कलेवर को और भी निखारा जा सके, और आगे प्रकाशित किये जाने वाले अंकों के लिए रचनाओं का अभाव न हो। वित्तीय संकट भी एक दूसरी बड़ी समस्या है। रेल प्रशासन द्वारा खर्च में कमी लाने के लिए जो कदम उठाये गये हैं, उसी के परिणामस्वरूप इस अंक के पृष्ठों में कमी की गई है। 64 पृष्ठों के बजाय यह अंक 40 पृष्ठों की निकल रही है। आशा है, पाठकगण इस कठिनाई को समझकर इस अंक को ग्रहण करेंगे। आगे के अंकों के लिए जब पर्याप्त धनराशि मुहैय्या कराई जायेगी तो फिर 'कर्मवीर' के कम पड़े पृष्ठों को पूरा कर दिया जायेगा।

तकनीकी, साहित्यिक, समसामयिक एवं रुचिकर सामग्रियाँ खासकर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए उपलब्ध कराने का सहयोग दिया जाय तो और भी अच्छा होगा। यह 'कर्मवीर' के लिए आपका स्नेह होगा। कविता, गज़ल एवं आलेख आदि भी भेजे जा सकते हैं। प्राप्त सामग्रियों में से देख-परख कर ही रचनाएँ छापी जायेंगी। जिन रचनाओं को इस अंक में स्थान नहीं मिला है, उसकी एक वजह यह भी है कि पृष्ठ कम पड़ गया है। इसे पाठकगण या रचनाकार अन्यथा नहीं लेंगे।

हम आभारी हैं श्री अनिमेष कुमार सिन्हा, वरि० मंडल यांत्रिक इंजीनियर डीजल शेड, पूर्व रेलवे, जमालपुर का जिनके मार्ग निर्देशन से पत्रिका सम्पादन एवं प्रकाशन का कार्य हम सुगमता पूर्वक कर पाये हैं। इनके अमूल्य दिशा निर्देशन से ही इस पत्रिका के कलेवर में निखार आ सका है।

साथ ही हम सम्पादक-मंडल उन रचनाकारों के भी आभारी हैं जिन्होंने इस अंक के लिए अपनी रचनाओं को भेजकर हमें अनुगृहीत किया है। नव वर्ष की मंगलकामनाओं के साथ। मेरी बातें यहीं खत्म नहीं होती है – आगे भी जारी रहेगी मेरी बातें।

(विपुल रंजन पांडेय)

अगले पन्नों में

1.	सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति की आवश्यकता (तकनीकी निबंध)	:	सुरेश चन्द्र शर्मा	9 – 10
2.	क्या कन्याओं का शिक्षित होना अभिशाप है (निबन्ध)	:	निर्मला महाराज मिथलेश कुमार	– 11
3.	देनी होगी चुनौती (कविता)	:	रामकृष्ण सहस्र बुद्धे भारती	– 11
4.	दाढ़ी पकी है तो क्या है ? (ललित निबंध)	:	ज्योतीन्द्र प्रसाद सिंह	12 – 13
5.	पावस गीत	:	शंकर प्रसाद मालाकार	– 13
6.	कैंसर की रोकथाम (मेडिकल बुलेटिन)	:	बाबूलाल सिंह	14 – 15
7.	कला और हम (साहित्यिक निबंध)	:	सरनजीत सिंह	– 16
8.	कवयित्री श्रीमती आभा प्रदीप कुमार को साहित्यिक सम्मान – एक रिपोर्ट	:	भूषण कुमार	– 17
9.	मानवता की पुण्यभूमि सौन्दर्यमयी कन्याकुमारी	:	समीरण दीर्घांगी	– 18
10.	लघु कथाएँ	:	विजय कुमार गुप्त	– 19
11.	आदर्श घास के मैदान (लॉन) की स्थापना कहाँ और कैसे करें ?	:	ओमप्रकाश सिंह	20
12.	कितनी ऊँचाई – कितनी गहराई (कहानी)	:	राजकिशोर मंडल	21 – 24
13.	उजाले की ओर (लघु कथा)	:	सतीशराज पुष्करणा	– 24
14.	कार्य संस्कृति के प्रमुख तत्त्व	:	विपिन कुमार सिंह	25 – 26
15.	गजलें	:	नजरुल इस्लाम खाँ	– 26
16.	140 टन गॉटवाल्ड क्रेन -- कार्य संचालन निर्देश (तकनीकी लेख)			27 – 30
17.	हिन्दी है भारत की बोली (चिंतन)	:	स्व० शंकर दयाल सिंह	31 – 33
18.	राजभाषा हिन्दी और भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अंक	:	डॉ० रमेश चन्द्र शुक्ल	34 – 35
19.	कुमार विजय गुप्त की चार कविताएँ			36 – 37
20.	कविताएँ एवं गजल – मु० वकील अंसारी, ओम प्रकाश वर्णवाल, राजकुमार, आभा प्रदीप कुमार, रामचन्द्र मयंक आदि।			38 – 40

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति की आवश्यकता

औद्योगिक प्रतिष्ठान की प्रगति व खुशहाली निर्भर करती है उसके द्वारा अपनाये जा रहे सुरक्षा प्रणाली पर। बिना सुरक्षा के कोई प्रतिष्ठान उत्पादन व गुणवत्ता के उच्च शिखर पर नहीं पहुँच सकता। वर्तमान समय में सुरक्षा ही एक निर्विवाद विषय है। अतः इसमें श्रमिकों, यूनियनों, अधिकारियों तथा प्रबंधन के सहयोग परम् आवश्यक है।

दुर्घटनाओं का विश्लेषण करने पर कटु सत्य उभरकर आता है कि अधिकतर दुर्घटनायें मानवीय मूल के कारण होती है। यांत्रिक दोषों से होनेवाली दुर्घटनायें बहुत कम है।

दुर्घटनाओं के मुख्य कारणों में व्यक्ति की लापरवाही व असावधानी, सुरक्षा के प्रति सजगता का अभाव, तालमेल का अभाव, अति आत्म-विश्वास, सुरक्षा नियमों की अवहेलना, जल्दबाजी, असुरक्षित कार्य, असुरक्षित कार्य विधि आदि प्रमुख है। दुर्घटना के ये सभी कारण मानव जनित है। अतः इसके निवारण की जिम्मेदारी भी मानव पर है।

इन कारणों को दृष्टि में रखते हुए शासन व प्रबंधन ने विभिन्न सुरक्षा नियम बनाये, कार्यदशाओं में सुधार किये गये, लोगों में सुरक्षा के उपकरण बाँटे गये, सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये गये, सुरक्षा के प्रति सजगता जगाने के उपाय किये गये। पर इन सारे प्रयासों के बाद भी दुर्घटनायें घटित हो रही हैं, कर्मचारी लापरवाही करते हैं, भूल करते हैं, सुरक्षा के नियमों की अवहेलना कर जोखिम उठाते हैं और दुर्घटना के शिकार होते हैं। इतने नियम, कानून बनाने के बावजूद भी दुर्घटनायें निरन्तर जारी है। अतः यह सिद्ध होता है कि मात्र कानूनी प्रावधानों से सुरक्षा में वृद्धि नहीं की जा सकती।

अतः, सारे नियमों, उपायों तथा प्रयासों को सफल बनाने की आवश्यकता है। ये सब सुरक्षा संस्कृति को विकास करना है जिससे कर्मचारी स्वयं ही इन सुरक्षा निर्देशों का पालन करने लगे। अतः सकारात्मक दृष्टि एक नये सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति को जन्म देगी।

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति—सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति से तात्पर्य है कि हम स्वतः सुरक्षा के सारे नियमों व नीति निर्देशों का पालन करें। सुरक्षा के लिये दिये गये उपकरणों का उपयोग स्वेच्छा से करते हैं। सुरक्षा हमारी दैनिक दिनचर्या की आदतों में शामिल हो जाती है। इस संस्कृति में व्यक्ति स्वयं सुरक्षा का पालन करता है। वह किसी डर, भय या कानून के दबाव के कारण सुरक्षा को नहीं मानता बल्कि उसे वह प्राथमिक जरूरत समझता है।

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति की आवश्यकता :

सभ्य समाज में कोई भी चीज किसी पर लादी नहीं जा सकती। चाहे वह कानून के माध्यम से ही क्यों न हो और यही बात सुरक्षा पर भी लागू होती है। सुरक्षा के नियम सभी के हित में होते हुए भी इसे लोग अपनाने में कोताही बरतते हैं। यही कारण है जो सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति के विकास के लिये बाध्य करती है।

इसमें कर्मचारियों का हित, प्रबंधन का हित तथा राष्ट्र व समाज का हित निहित है। इससे दुर्घटनाओं पर रोक लग सकेगी जिससे जान-माल की क्षति, उत्पादक श्रम घंटों की क्षति को रोका जा सकता। इसको अपनाने से उत्पादन में वृद्धि व उच्च गुणवत्ता की प्राप्ति हो सकती है। इसकी आवश्यकता हर किसी को है, इसलिये इसके लिये हम सभी को प्रयास करने होंगे।

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति के विकास विभिन्न घटकों की भूमिका :

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति को प्राप्त करने हेतु निम्न घटकों की अलग-अलग भूमिका है। प्रत्येक का योगदान अच्छी सुरक्षा संस्कृति व दुर्घटना शून्य समाज को जन्म दे सकता है।

(क) कर्मचारियों व यूनियनों की भूमिका
(ख) अधिकारियों व प्रबंधन की भूमिका
(ग) सरकार व समाज की भूमिका

(क) कर्मचारियों व यूनियनों की भूमिका :

सुरक्षा संस्कृति के विकास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका श्रमिकों व श्रमिक यूनियनों की है। सरकार सुरक्षा के नियम बना सकती है परन्तु इसका प्रयोग कर्मचारियों को सही वक्त पर करना पहली जिम्मेदारी है।

शूरू में ये नियम व उपकरण जरा असुविधाजनक लगते हैं चूँकि ये हमारी आदतों में शामिल नहीं होते। परन्तु धीरे-धीरे अगर हम प्रयास करें तो हमें यह पता नहीं चलेगा कि ये सुरक्षित आदतें कब हममें शामिल हो गई। सुरक्षा उपकरण का उपयोग हम अपनी मर्जी से करें न कि किसी डर, भय या नियम के कारण। हमारे भीतर एक बदलाव की जरूरत है जैसे कि एक सच्चा सिपाही बिना उचित हथियार के जंग में नहीं जाता, वैसे ही हमें भी सुरक्षा वगैर कोई कार्य नहीं करना चाहिये। अन्यथा हमारी पराजय निश्चित है। इसलिये श्रमिकों में एक दृढ़ इच्छा शक्ति और अनुशासन की जरूरत है जिससे हमारा जरा सा प्रयास बेशकीमती जीवन के लिये रक्षा कवच का निर्माण करेगा।

इस सुरक्षा संस्कृति में श्रमिकों संघों की महत्वपूर्ण भागीदारी है। वे जोखिम भरी कार्य स्थिति, असुरक्षित कार्यविधि, सुरक्षा उपकरण आदि विषय पर उच्च प्रबंधन का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। साथ ही श्रमिकों में सुरक्षा के प्रति चेतना जगाने में भी सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

(ख) अधिकारियों व प्रबंधन की भूमिका :

सुपरवाइजर व अधिकरी वर्ग इस संस्कृति के फलने फूलने

में खाद व पानी का काम करते हैं। श्रमिकों से काम लेते वक्त यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कहीं वह सुरक्षा की अवहेलना तो नहीं कर रहा, गलत कार्यविधि तो नहीं अपना रहा या जल्दबाजी व लापरवाही तो नहीं कर रहा। इन असावधानी को रोकना, साथ ही उसका उचित मार्गदर्शन करना अति आवश्यक है।

सुरक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा श्रमिकों को प्रोत्साहित करने में अधिकारी व प्रबंधन दोनों ही विशेष भूमिका निभा सकते हैं। श्रमिकों में अनुशासन लाना तथा कार्य पर भेजने से पूर्व उसकी मानसिक स्थिति को परखना बेहद जरूरी है। चूँकि बेमन से किया गया कार्य दुर्घटना को निमंत्रण देता है।

इसी प्रकार एक जगह पर एक ही जैसा कार्य लम्बे समय तक करने से जहाँ अति आत्मविश्वास पैदा करता है वहीं नीरसता आ जाती है और ये ही दुर्घटना का कारण बनती है। अतः अधिकारियों व प्रबंधन को चाहिये कि बीच-बीच में श्रमिकों का कार्यस्थल व कार्य बदलते रहना चाहिये।

सुरक्षा नियमों की जानकारी, सुरक्षा संबंधित चर्चायें तथा प्रबंधन की विभिन्न सुरक्षा प्रोत्साहन योजनाओं का कर्मचारियों तक पहुँचाया जाना चाहिये। समय पर सुरक्षा उपकरण की उपलब्धता करना प्रबंधन का दायित्व है।

(ग) सरकार व समाज की भूमिका :

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति को स्थायी बनाने की लिये सरकार व समाज दोनों को साथ-साथ प्रयास करने होंगे। जहाँ सरकार पर सुरक्षा के लिये आवश्यक नियम बनाती है वहीं इसके पालन की जिम्मेदारी हमारे समाज पर है। अतः इसमें दोनों का सहयोग अपेक्षनीय है।

सुरक्षा की जरूरत सिर्फ संयंत्र में ही नहीं बल्कि इसकी जरूरत हमारे घर से शुरु होती है। घर पर बिजली के उपकरणों, रसोई में गैस आदि का उपयोग, जरा सी भी असावधानी हमारे लिये घातक हो जाता है। इसी प्रकार अपने बच्चों, बालिगों सभी को सड़क पर चलने वक्त, वाहन चलाते हुए ट्रॅफिक नियमों का पालन ही सुरक्षा का कवच बनता है अन्यथा दुर्घटना का जन्म होता है।

सरकार को मात्र नियम बनाने तक सीमित नहीं होना चाहिये। उसे सुरक्षा संस्कृति के विकास के लिये अपने संचार माध्यमों जैसे रेडियो, टी० बी० आदि का पूरा उपयोग करना चाहिये। सुरक्षा के प्रति जागरूक करने पर ये माध्यम बहुत ही सशक्त भूमिका निभा सकते हैं। अतः सरकार व समाज दोनों मिलकर सुरक्षा के इस वृक्ष को सदा फलदायी बना सकते हैं।

इस प्रकार श्रमिकों के अनुशासन, यूनियनों का सहयोग, अधिकारियों का मार्गदर्शन, सरकार की प्रतिबद्धता तथा समाज की जागरूकता को मिलाकर सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति के विकास का सुगम मार्ग प्रशस्त होगा।

सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति से लाभ :

१. **श्रमिकों को लाभ**—इससे सबसे अधिक लाभ श्रमिक वर्ग को है। यह संस्कृति उसे सम्पूर्ण जीवन सुरक्षित व खुशहाल रखता है। उसके दुर्घटनाग्रस्त होने से जहाँ उसकी आय क्षमता में कमी आती है वहीं वह आजीवन अपाहिज भी हो सकता है। यह स्थिति उसके व उसके परिवार के लिये एक दुःखदायी स्थिति है। इससे उसे एक ऐसे रक्षा कवच की प्रा होती है जो सदैव उसके पास रहकर रक्षा करता है।

२. **प्रबंधन को लाभ**—दुर्घटनाओं से मात्र श्रमिकों को क्षति न होती बल्कि इससे प्रबंधन को भी नुकसान उठाना पड़ता है साथ ही प्रबंधन व कम्पनी की बाजार में साख भी प्रभावि होती है। भय व असुरक्षा से उत्पन्न वातावरण के कारण अ कर्मचारियों का मनोबल टूटता है जो हमारे उत्पादन गुणवत्ता दोनों को प्रभावित करती है।

अतः सुरक्षा संस्कृति के विकास से कार्य का स्व वातावरण बनता है जिससे श्रमिकों का मनोबल ऊँचा होता जो प्रबंधन व कम्पनी को आर्थिक लाभ देता है। दुर्घटना में कमी आती है, साथ ही प्रबंधन के विकास की आधारशि साबित होती है।

३. **समाज को लाभ**—दुर्घटनाओं से होने वाले सामाजिक क्षति मूल्यांकन करना असम्भव है। इस सुरक्षा संस्कृति से ज लोगों में सुरक्षा के प्रति नई चेतना जगेगी वहीं अपंग अपाहिजों की संख्या में कमी आयेगी। इस तरह एक स्वस्थ सुन्दर, खुशहाल समाज की रचना होगी। यह कितने परिवा को उजड़ने से बचा सकता है तथा बच्चों एवं युवा पीढ़ी भी सुरक्षा की भावना पनपने लगती है--यही मुख्य सामाजि लाभ है।

४. **राष्ट्र को लाभ**—इस सकारात्मक सोच से देश में दुर्घटना में कमी आयेगी, असामाजिक मृत्यु में कमी, राष्ट्रीय अ में वृद्धि, सकल उत्पादन में वृद्धि, गुणवत्ता में वृद्धि, आर्थि हानियों में कमी आदि मुख्य लाभ है।

इसके अलावे सुरक्षा के प्रति एक राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एक महत्वपूर्ण लाभ है जो विकास की दौड़ में ए स्वस्थ व मजबूत समाज राष्ट्र के साथ होगा। इस तरह प्रत्य व अप्रत्यक्ष रूप से सकारात्मक सुरक्षा संस्कृति से राष्ट्र अनेक लाभ है।

अंत में सुरक्षा हम सभी का दायित्व है। दुर्घटना की रोकथाम प्रत्येक का कर्त्तव्य है। सुरक्षा की जरूरत कि एक की नहीं है बल्कि हम सब इसके साझीदार हैं। हम अप सुरक्षा के साथ अपने सहकर्मियों की सुरक्षा का भी ख्या रखें। हमारी प्रगति की कुंजी सुरक्षा में निहित है और सुर की कुंजी हमारे हाथों में है। हम सब मिलकर संकल्प क कि हम सब लोग सुरक्षा के इस पावन संस्कृति के विका में अपना पूर्ण योगदान करेंगे। साथ ही एक सुखमय दुर्घटन विहीन समाज का निर्माण करेंगे।

□ **सुरेश चन्द्र शम**

दिनांक–मार्च '97 वरिष्ठ सेक्सनल अभियंता/संरक्ष

जमालपुर प्रगतिविभा

* * *

"क्या कन्याओं का शिक्षित होना अभिशाप है"

सुसंस्कृत समाज की संरचना के लिए पुरुष के साथ-साथ नारी ो भी शिक्षित होना अनिवार्य है। युग की आवश्यकता के अनुसार ोक बुद्धिजीवी माता-पिता लड़कों के समान ही अपनी लड़कियों ो भी ऊँची शिक्षा देने का प्रयास कर रहे हैं। हमारी सरकार भी ड़कियों की शिक्षा पर प्रचुर मात्रा में धन व्यय कर रही है। लस्वरूप आज समाज में शिक्षित लड़कियों का अभाव नहीं है। ीवन के हर क्षेत्र में शिक्षित लड़कियों की प्रतिभा देखी जा कती है। किन्तु शिक्षा प्राप्त कर लेना ही लड़कियों के जीवन का र्ण विराम नहीं है। उनके जीवन का महत्वपूर्ण पहलू है विवाह और आदर्श हस्थ जीवन का निर्माण। लड़कियों को जितनी ऊँची शिक्षा दीजिए उतनी ही नके विवाह की समस्या जटिल होती जाती है। कारण कि उनके लिए सुयोग्य र नहीं मिल पाता और संयोगवश कहीं मिल भी गया तो लड़के के माता-पिता त लड़के के जन्म से लेकर पढ़ाई तक का सारा खर्च कन्या के पिता से वसूलने ी ताक में रहते हैं।

अब आप जरा सोचिए कि जिस माता-पिता ने सुख-दुःख हकर अपनी लड़की को पढ़ाया-लिखाया, उसे स्वावलंबी बनाकर नुष्यता के धरातल पर जीने योग्य बनाया, उस अभिभावक को न्या के विवाह के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़े ऐसे लोगों े सामने जाना पड़े जो मनुष्यता के मूल्यों को ताख पर रखकर ड़े गर्व के साथ दहेज के हथौड़े से लड़कीवालों के हृदय पर ुठाराघात करते हैं, यह सभ्य समाज का कैसा न्याय और ादर्श है? मैं तो समाज के कर्णधारों से यह प्रश्न पूछना चाहूँगी े कन्याओं का शिक्षित होना अभिशाप नहीं तो क्या है?

समाज के अधिकांश लोगों की यह धारणा है, कि हमें पढ़ी-लिखी बहू मिले, किन्तु क्या उनलोगों के मन में यह भाव कभी नहीं उठता कि शिक्षित बहू पाने के लिए दहेज को तिलांजलि देकर समाज में आदर्श का नया अध्याय शुरू करें। परन्तु वाह रे हमारा समाज, जो तिलक-दहेज को ही अपनी प्रतिष्ठा मानता है। हमें घृणा होती है समाज के ऐसे लोगों से, तरस आता है उनके विचारों पर, दया आती है उनके संकीर्ण मनोभावों पर जो आज के बदलते परिवेश में अपने को ढाल न सके। प्रायः समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीविजन आदि में पढ़ने, सुनने और देखने को मिलता है कि अमुक बहू जला दी गई या मार डाली गई तो बार-बार मन में यह प्रश्न उठता है कि ऐसा शिक्षित बहुओं के साथ क्यों होता है? कारण स्पष्ट है कि एक शिक्षित नारी समाज के ऐसे हृदयहीन एवं विवेक शून्य लोगों के अत्याचारों तथा दुर्व्यवहारों को सहन करने में अपने को असमर्थ पाती है। इस प्रकार तरह-तरह की यातनाओं में झुलसती बहुओं का शिक्षित होना अभिशाप नहीं तो क्या है?

अंत में मैं यही कहना चाहूँगी कि यदि हमारी शिक्षित बहनें स्वावलंबी बनकर जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष वर्ग को मात देने की शक्ति प्राप्त करें तो अभिशाप वरदान में बदल सकता है।

□ **निर्मला महाराज मिथलेश कुमार**
C/o–प्रधान यन्त्र निरीक्षक,
पूर्व रेलवे जमालपुर

* * *

देनी होगी चुनौती

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता
यह सच है
लेकिन इससे बड़ा सच है कि
आँख जरूर फोड़ सकता है,
एकाकी विरोध परिवर्तन लाये, न लाये
उपस्थिति दर्ज अवश्य कराता है
हालाँकि चुक जाता है वह
थक जाता है, मंजिल के पहले ही
कर देता है आत्मसमर्पण तंत्र के सामने
खुद को बौना पाकर
तोड़नी होगी खामोशी
इकट्ठा करनी होगी चुप्पी
जगानी होगी सोयी हुयी ताकत
जो हो गयी है गूंगी बहरी
वर्ना हो सकता है
कल का सूरज हम न देख पाएँ
इसलिये जरूरी है एका
सब कुछ भूलकर
सुनहरे कल के प्रभात के लिये
देनी होगी चुनौती
समाज के ठेकेदारों, रंगदारों को
शोषण मुक्त समाज रचना के लिये
समरसत्ता लाने को
जहाँ पी सकें पानी शेर बकरी एक साथ
रचना होगा एक नया घाट।

□ **रामकृष्ण सहसुकट्टे 'भारती'**
डीजलशेड, पूर्व रेलवे, मुगलसराय
पता–448AB–यूरोपीयन कॉलोनी, मुगलसराय

दाढ़ी पकी है तो क्या है ?

लड़कपन खेलकर खोया, जवानी नींद भर सोया, बुढ़ापा देखकर रोया। यह पुरानी कहावत मानव स्वभाव के बारे में शाश्वत सत्य है। बुढ़ापा जीवन का एक कटु सत्य है। जीवन की तीन अवस्थाओं–बचपन, युवा, बुढ़ापा में सबसे तकलीफ देय और कष्टदायक बुढ़ापा ही है।

अगर जवानी के दिनों में ही अपने भावी बुढ़ापे के बारे में सोचकर योजना बनायी होती, कुछ 'प्लान' कर लिया तो यकीन मानिये आप बुढ़ापा देखकर हरगिज नहीं रोयेंगे। अगर इंसान के जीवन के अंतिम वसंत के लिए कोई योजना नहीं बनायी तो उसके लिए दुःखदायी के साथ-साथ नुकसानदेह भी होगा। शरीर से असमर्थ व्यक्ति अपने को अन्य लोगों की तरह समाज में योग्य भी साबित नहीं कर पाता। सबसे बड़ा धन स्वास्थ्य ही है। अगर हम स्वस्थ नहीं तो मेरे लिए दुनियाँ बेकार। हम हैं, तो बेटा-बेटी, पत्नी, दोस्त-मोहिम सब हैं। हम नहीं तो कुछ नहीं। सरकारी पेशे से अवकाश प्राप्त व्यक्तियों से अधिक चुस्त-दुरूस्त ग्रामीण क्षेत्र के बूढ़े लोग होते हैं, जो जिन्दगी के अंतिम पड़ाव तक भी हट्ठे-कट्ठे रहकर मानसिक रूप से शांतिचिन्त बने रहते हैं। अपने को व्यस्त रखने के लिए छोटे-मोटे ही सही, समय गुजारने के लिए रोजगार कर लेना, कोई बुरी बात नहीं। दौलत की प्रचुरता से मदमस्त व्यक्ति समय गुजारने से बेहतर घर में बैठना पसन्द करते हैं। आलस्य बढ़ जाने से चाहते हुए भी समय गुजारने के लिए कोई काम संभव नहीं हो पाता।

मनुस्मृति में उल्लेख है, कि माता-पिता और आचार्य पुरुष के लिए बहुत बड़े गुरु होते हैं। पुत्र को इनकी सेवा-सुश्रुषा करनी चाहिए। ये ही तीन वेद हैं, और ये ही तीन देव हैं। इनकी सेवा और आदर करने वाले सबसे बड़े धर्मात्मा। जिन्होंने इन तीनों का अनादर किया उनकी सभी क्रियाएँ फलहीन होती है।

आज युवा वर्ग पत्नी और बच्चों को ही परिवार समझने लगे हैं। यह संकीर्ण मानसिकता का परिचय है। वृद्ध लोगों की उपस्थिति को मानसिक तनाव का कारण मानने लगे हैं। उन पर किया जाने वाला सामान्य खर्च भी बोझिल महसूस हो रहा है। बच्चों को पढ़ा-लिखाकर अच्छी-अच्छी जिन्दगी देने वाले आज अपने ही बच्चों द्वारा की जा रही उपेक्षा और उत्पीड़न के कारण इंसानी जिंदगी से वंचित किए जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बहुत बूढ़े वर्त्तमान स्थिति से उबकर मौत को गले लगाना ही बेहतर विकल्प मानने लगे हैं।

हमारे सुकवि सम्राट पंडित अयोध्या सिंह उपाध्या "हरिऔध" ने मुहावरेदार शब्दों में (२०वीं शताब्दी के दूसरे दश में) कहा है–

किरकिरी वह आँख का जाए न बन,
जो हमारी आँख का तारा रहा।
कर न दे टुकड़े कलेजे के वही,
है जिसे टुकड़ा कलेजे का कहा॥

पर मुझे बुढ़ापा से हार मानना स्वीकार नहीं। कवि श्री आर प्र० सिंह के शब्दों में "यह जीवन क्या है ? निर्झर है मस्ती इसका पानी है।" किसी ने ठीक ही कहा है–

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है,
मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।

श्री बच्चन जी ने कहा है–

वृद्ध जग को क्या अखरती है,
क्षणिक मेरी जवानी।

उम्र जिन्दादिली में कोई बाधा नहीं। नेहरू जी कहा करते "मैं ६० वर्ष का जवान हूँ।"

मेरे विचार से–"६० (साठ) और ७० (सत्तर) क्या। की कोई गिनती नहीं होती।

दिल हो पुरजोश, बुढ़ापा यौवन बन जाता है। वृद्धों की प्रति का समाज उपयोग नहीं कर पा रहा है। अवकाश प्राप्त होने बाद हमें नियमित रूप से नित्य प्रति कुछ निश्चित घण्टे सम कल्याण के लिए देकर समाज को उपकृत कर सकते हैं। हमें मुख्य लक्ष्य रखकर काम करना होगा। जिन्होंने आत्मविश्वास कायम रखा, उसके लिए वृद्धावस्था पड़ाव नहीं मंजिल पर पहुँ के कुछ कदमों का अन्तराल है, जहाँ और तेज गति से दौड़ने जरूरत है। उनके लिए अवकाश आराम का समय नहीं। बलि दमित इच्छाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का समय है। सत्त अस्सी की उम्र में सक्रिय रहनेवाले ये व्यक्ति कोई अवतार तो नहीं हमारे गाँवों में कुछ सक्रिय व्यक्ति अभी भी अपना काम करने अलावे रचनात्मक कार्यों में एक कदम भी पीछे नहीं। सच है, पीठ नहीं दिखाते। एक और उदाहरण लें। पचहन्तर वर्षीय प्रख्य नाटककार डाक्टर चतुर्भुज १९८६ में सेवा से निवृत होने के १९९५ में पी० एच० डी० की उपाधि हासिल की और प्रधानम कोष सहायतार्थ नाट्य प्रदर्शन करते रहे। जमुई स्टेडियम खगौल गर्ल्स कॉलेज आज भी देखे जा सकते हैं, जिनमें इन आर्थिक सहयोग अविस्मरणीय है।

जिन्दगी के अन्त तक कामुकता, प्रजनन, अर्थोपार्जन, कुटुम्ब-चर्चा के अतिरिक्त कोई बात गृहस्थ को सूझती ही नहीं, होश संभालने के दिन से होश बन्द होने की घड़ी तक गृहस्थ स्तर ही आकांक्षाओं मनक्षेत्र को अक्रांति किये रहती है। ब्रह्मचर्य, वामप्रस्थ एवं सन्यास की परम्परायें नष्ट हो गयी। केवल एक ही आश्रम बचा है, गृहस्थ। साधु, सन्तों की मनोदशा और गतिविधियों के देखते हुए उन्हें भी भगवाधारी गृहस्थ ही कह सकते हैं। फलस्वरूप भारतीय समाज की स्थिति डाँवाडोल है।

समाज-सुधार हेतु जनसाधारण को कुछ त्याग एवं अनुदान प्रस्तुत करना ही पड़ेगा। इस पूँजी से प्रगति का भवन बनेगा। खासकर जो सरकारी सेवा से निवृत हो चुके हैं और सक्षम हैं, उनका उपयोग बड़ा ही चमत्कारी होगा।

पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए मानव-सेवा, परमार्थ-कार्य अपने समय श्रम एवं मनोयोग को सुविधानुसार लगाने का संकल्प लें तो संभव है, हम और हमारा समाज विराम के पथ पर अग्रसर होगा। घरेलू कार्य में व्यस्त लोग भी चाहे तो सहयोग कर सकते हैं। २४ घंटे में कम से कम चार घंटे परमार्थ के लिए अर्पित कर यश के भागी बन सकते हैं। सोने के लिए ७ (सात) घंटे, फुटकर कार्यों के लिए ५ (पाँच) घंटे, गृहकार्य के लिए ८ (आठ) घंटे। इस प्रकार हम दैनिक कार्यक्रम बनाकर ४ (चार) घंटे सेवा कार्य परमार्थ में दे सकते हैं। छुट्टी के दिनों में सरकारी कर्मचारियों का सहयोग भी अपेक्षित है। रचनात्मक प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाना पड़ेगा। समय और क्षमता के सदुपयोग का लाभ के लिए अवकाश प्राप्त कर्मचारी का निःसंकोच भाव से आगे आना चाहिए। इससे इहलोक एवं परलोक दोनों के लिए काम होगा। व्यक्ति और समाज दोनों उपकृत होंगे। "परोपकराय पुण्याय, पापाय परपीड़नम्" अक्षरसः आचरण में प्रयुक्त होगा। यों तो मानव जीवन पर्यन्त ममता से मुक्त नहीं हो पाता है, यही दुख का कारण भी हैं।

ममता तू न गयी मेरे मन से।
कर थाके पग कांपन लागे
लाज गयी नैननते-ममता....।

अतः हम संसार में आकर कुछ ऐसा काम कर चले, जिसे लोग याद रखें।

"जब तुम जग में आये थे,
जग हंसमुख तुम रोये।
ऐसी करनी कर चलो,
तुम हंसमुख जग रोये।"

किसी शायर का कहना है–

"कुछ ऐसा काम कर जिन्दा रहे नौशाद तूँ,
न रहे दुनियाँ में दुनियाँ को आये याद तूँ॥

अन्त में हम सब भूले कि हम बिहार के हैं, जहाँ "साठा तो पाठा" को लोग सही मानते हैं। हमारे परम पूजनीय वीर बाँकुरा बाबु कुँवर सिंह ने तो और दो कदम आगे आकर बिहारियों को प्रेरणा लेने के लिए विवश किया है। इस संदर्भ में प्राचार्य मनोरंजन के शब्द याद आते हैं–

"सच कहते हैं वीर कुँवर सिंह बड़ा वीर मर्दाना था,
अस्सी वर्षों के बूढ़े में जगा जोश पुराना था॥

ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है, "दाढ़ी पकी है, तो क्या है, दिल जवानों से बढ़ के जवाँ है।"

□ **ज्योतीन्द्र प्रसाद सिंह,** एम० ए०
अवकाश प्राप्त रेल-जमालपुर शिक्षक

* * *

पावस गीत

पावस में निष्ठुर नहीं आए।
बैरिन कौन मधुर साजन के,
मन में सखी री आज समाए॥
खत आए द्वौ पक्ष गुजर गए
राह निरखते शाम-सुबह री।
धक्-धक् जिय धड़कता मेरा
कैसे धाऊँ, दिल परवस री॥
सावन की बदली पलकों से,
झर-झर झरती, छूट न पाए।
पावस में निष्ठुर नहीं आए॥

गुंजन भौरों का बगिया में,
सखियों के सावन का हिंडोला।
रिमझिम नृत्य सरस बदली के,
नभ का सतरंगी अधगोला॥
सबके सब फबती कसते-से,
शतदल से दिल को दहलाएँ, पावस
बड़भागिन तू, वादे से ही
आ जाता है तेरावाला।
जनम-जनम का करवा चौथ भी
आज विमुख है बन हिम-ज्वाला॥

बहन! मिले तो कहला देना,
आँगन की तुलसी मुरझाए!
पावस में निष्ठुर नहीं आए॥
अन्तर का जब प्रेम उमड़ता,
दिल वियोग क्षण एक न सहता।
व्याकुल मतवाली कर देता,
आँख खुली, पर स्वप्न गुजरता॥
दूर-भेद मिट जाए चाहे,
लाख कोस प्रीतम बस जाए।
पावस में निष्ठुर नहीं आए॥

□ **शंकर प्रसाद मालाकर**
कार्यालय अधीक्षक/बी०टी०सी०
पू०रे० जमालपुर

कैंसर की रोकथाम

प्रस्तोता—डा० सी० खन्डेलवाल,
सुप्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ एवं अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर निरोध यूनियन,
जेनेवा के फैलो एवं अन्तर्राष्ट्रीय कैंसर टेक्नोलोजी
ट्रान्सफर एवार्ड से अमेरिका में सम्मानित ।

(कैंसर एक ऐसा भयानक रोग है जो एक हद तक आग भी असाध्य बना हुआ है । विश्वभर के अनेक शरीर शास्त्री एवं वैज्ञानिक एक जुट होकर इस प्रयत्न में लगे हुए हैं कि किसी तरह इस घातक रोग की सफल एवं निश्चित चिकित्सा खोज निकाली जाय । अतः इस कष्ट साध्य, व्यय साध्य एवं असाध्य सिद्ध होनेवाले इस रोग के बारे में पहले से ही व्यापक जानकारी देने के लिए एक ''जनजागरण अभियान'' विश्व स्तर पर छिड़ा हुआ है। संस्कृत में एक श्लोक है–प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम् अर्थात् कीचड़ में पैर डालकर फिर धोने की अपेक्षा कीचड़ से दूर रहना ही अच्छा है। अंग्रेजी में कहा है–Prevention is better cure—अर्थात् इलाज कराने की अपेक्षा रोगों से बचाव करना अधिक अच्छा है । अतः, हमें अपने उचित आचरण, नियमित आहार-विहार एवं स्वास्थ्य के नियमों के पालन में लापरवाही न वरतें ।

''केयर'' संस्था के लिये लिखा उनका लेख पाठकों को उपयोगी एवं आवश्यक जानकरी देने के लिये पटना से प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक पत्र 'टाइम्स ऑफ इंडिया'' से उद्धृत कर हिन्दी में दिया जा रहा है ।)

कैंसर की रोकथाम दो तरह से की जा सकती है–प्राथमिक रोकथाम उन प्रयत्नों को कहते हैं जो कैंसर उत्पन्न करनेवाले लक्षणों या शरीर के किसी हिस्से में गांठ की उभरती प्रक्रिया को रोके जो मौलिक कैंसर को उत्पन्न होने से रोकने का प्रथम कैंसर उन्मूलन का प्रेरणाप्रद कार्यक्रम है । द्वितीय रोकथाम उन प्रयत्नों को कहा जा सकता है जिसके अन्तर्गत इसकी प्रारम्भिक स्थिति की गहन छानबीन, जाँच-पड़ताल और अतिशीघ्र रोग का पता लगाने के कार्यक्रम होने चाहिये ताकि इस रोग को प्रारम्भिक स्थिति में ही पकड़ लिया जाय और इलाज के उपायों को बढ़ाया जाय ।

यह मानव कैंसर प्रमुखता हमारे जीवन यापन की गलत शैली से और कुछ हद तक अप्रशंसनीय पर्यावरण-प्रदूषण से भी सम्बन्धित है । कैंसर के एक तिहाई मामलों का अधिकतर तालुकात पर्यावरण-प्रदूषण से है । भारत में पेट और फेफड़े के कैंसर से ज्यादा लोग पीड़ित रहते हैं । पर्यावरण के बेहतर माहौल, बेहतर भोजन तथा बेहतर स्वास्थ्य बनाये रखकर निश्चित रूप से कैंसर की रोकथाम की जा सकती है । लोगों का विश्वास है कि पर्यावरण में बदलाव लाने से कैंसर से उनकी रक्षा हो सकती है । जो लोग अपने रहन-सहन के तौर तरीकों में परिवर्तन करने में लापरवाही करते हैं, वे ही कैंसर जैसे भयानक रोग से पीड़ित हो जाते हैं ।

तत्काल एक तिहाई कैंसर के मामले रोके जा सकते हैं । इस प्रारम्भिक रोकथाम की भविष्यवाणी के अन्तर्गत एक बड़ी संख्या का बचाव ''तम्बाकू सेवन के उन्मूलन'' पर निर्भर करता है । शेष संख्या खान-पान में परिवर्तन, शारब-सेवन में संयम पेशागत बिमारियों के उन्मूलन, मानवनिर्मित विकीरण से उत्पन्न रेडियो धर्मिता में नियंत्रण, यौन सर्म्पकों से रोग संक्रमण का नियंत्रण, विभिन्न पर्यावरण के वातावरण में शोचनीय गिरावट, हार्मोन के औषधीय उपचार, जल एवं वायु प्रदूषण में कमी से सम्बन्धित मामले हैं । कुछ रसायन, जो भोज्यसामग्री में संरक्षण या पकाने की प्रक्रिया में या रंग को निखारने के लिए मिलाये जाते हैं, कैंसर फैलाने के लिये जिम्मेवार है । एक कठोर कानून भोज्य पदार्थों के बनाने की विधि, भोज्य पदार्थों की ग्राह्यता और रसायन पदार्थों की सहनशीलता के स्तर पर अंकुश रखने का ऐसा हो कि विसंगतियों का विस्फोट शरीर की स्वीकृति सीमा के अन्दर हो और खतरे नगण्य स्तर के हो । विकसित देशों में अत्यधिक खतरनाक कीटाणुनाशक दवाइयों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है, पर उन

प्रतिबन्धित दवाइयों की बिक्री को विकासशील देशों में अभी भी बढ़ावा दिया जा रहा है। ये सभी कैंसर के कुछ थोड़े मामलों से ही सम्बन्ध रखते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में जीवन यापन में महत्वपूर्ण बदलाव आने के कारण तम्बाकू से होनेवाले कैंसर में एक जबर्दस्त गिरावट आयी है, लेकिन विकासशील देशों में यह सही नहीं है जहाँ तम्बाकू से बननेवाली अन्य नशीली पदार्थों के सेवन में तीव्र बढ़ोत्तरी हो रही है।

पेट में होनेवाले कैंसर के कारणों को कम किया जा सकता है यदि नमकीन एवं अचारवाले भोज्य पदार्थों का उपयोग कम किया जाय और ताजेफल एवं हरी सब्जियों का नियमित उपयोग किया जाय। मलाई रहित दूध एवं चिकनाई रहित बैक्टीरिया जन्य दही जैसे पदार्थों का सेवन बड़ी आँत में होनेवाले कैंसर के खतरों को कम करने में एक निश्चित भूमिका निभाती है। नियमित व्यायाम स्तन एवं बड़ी आँत में होनेवाले कैंसर से सुरक्षा प्रदान करती है। फल एवं सब्जियों के अत्यधिक एवं चर्बीयुक्त पदार्थों के न्यूनाधिक सेवन से स्तन एवं बड़ी आंत के कैंसर होने की सम्भावना कम रहती है। विटामिन 'ए' और विटामिन 'सी' में कैंसर रोकने की प्रतिरोधक रासायनिक क्षमता है।

लिवर का कैंसर कण्ठनली एवं भोजननली का कैंसर शराब के अत्यधिक सेवन से सम्बन्धित है। कुछ दवाइयाँ भी कैंसर के कारण हैं और उनका उपयोग सावधानी से होना चाहिये। विभिन्न नारी रोगों से सम्बन्धित हार्मोन की उत्पत्ति के लिये ये दवाइयाँ काम आती है। गर्भाशय के मुख का कैंसर सेक्सजीवन से सम्बन्धित है। मध्य उम्र में महिलाओं का विवाह एवं परिवार-नियोजन का सफल कार्यक्रम इस कैंसर को कम करने में सहायता कर सकते हैं। २० वर्ष की अवस्था के पहले ही सेक्स की तीव्रता एवं अत्यधिक लोगों से यौन-सम्पर्क कैंसर के खतरे को बढ़ा देते हैं। कैंसर यौन-सर्म्पक से आसनी से एक दूसरे में विषाणुओं द्वारा प्रवेश करने वाला बिमारी समझा जाता है। धूम्रपान एवं भोजन में विटामिन 'ए', विटामिन 'सी' एवं फालिक एसिड की कमी भी कैंसर के सहयोगी कारण है। मुसलमानों में सुन्नत रस्म जननेन्द्री अंग में कैंसर न होने की कुछ सुरक्षा है।

भारतवर्ष में ४० प्रतिशत कैंसर रोका जा सकता है क्योंकि तम्बाकू सेवन से होनेवाले कैंसर की संख्या ऊँची है। मुँह का कैंसर जो भारतीय लोगों में सबसे आम है, प्रायः पूर्णरूपेण रोका जा सकता है, बशर्ते लोग खैनी खाना एकदम बन्द कर लें। सरकार की प्रभावशील ढंग से सार्वजनिक स्थानों पर धूमपान एवं खैनी खाने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध लगा देना चाहिये। कार्यालयों के भीतर तो कर्मचारियों को स्वतः विवेक से अपना धूम्रपान नहीं करना चाहिये। तम्बाकू के सेवन से होनेवाली बिमारियों से भारत में हरवर्ष साढ़े ६ से दस लाख लोग मरते हैं। तम्बाकू के सेवन पर नियंत्रण पाने के लिये यदि अभी से कारगर कदम नहीं उठाये गये तो अगले दो तीन दशकों में इस स्थिति के महामारी रूप ले लेने का अन्देशा है। बाजार में तरह-तरह के गुल, गुडाकू, खैनी, नशा बिक रहे हैं और लोग उसे खाकर कष्ट साध्य बिमारी मोल ले रहे हैं। इस स्थिति से निपटने के लिये एक व्यापक ''जन-जागरण'' अभियान छेड़ना चाहिये। मुख के कैंसर से बचने के लिये मुख की सफाई और दाँतों की अच्छी देखभाल जरूरी है। चूँकि पित्ताशय का कैंसर दुनिया के इस हिस्से में अधिक होता है, अतः इस रोगग्रस्त पित्त की थैली को निकाल देना चाहिये यदि कैंसर के लक्षण दिखलाई पड़े तो। विकासशील देशों में लिवर का प्राथमिक कैंसर भी आम बात है। इसे व्यक्तियों में हेपाटाटीश B के टीके देकर बहुत हद तक रोका जा सकता है।

खासकर बिहार में तम्बाकू से होनेवाले कैंसर के दुष्परिणामों के बारे में लोगों को शिक्षित करने की जरूरत है और रहन-सहन की जीवन शैली में बदलाव लाने के लिये लोगों को प्रोत्साहित किया जाय। सिर्फ ''खैनी के सेवन'' को नियंत्रित कर लेने मात्र से बिहार कैंसर के ३० प्रतिशत बोझ को कम कर लेगा।

सरकार, स्वयं सेवी संस्थाएँ ऐसे आयोजन करे ताकि कैंसर की रोकथाम के उपाय के लिये ''जन-चेतना'' बढ़े।

अनुवादक—बाबू लाल सिंह
अवकाश प्राप्त, रेल कर्मी, रेल इंजन कारखाना
पू० रे०, जमालपुर

* * *

कला और हम

जिसकी अंतरात्मा में कला न समायी वह मानव अपने जीवन में अधूरा रह जाता है। कलाकार चाहे वह किसी भी क्षेत्र का हो, चाहे वह वीणा के तारों में उलझा, पैरों में घुंघरूओं की खनखनाहट में फंसा, तबले पर अपने थिरकते हाथों को देखता या फिर रंगों की दुनिया में कैनवास पर ब्रशों द्वारा अपने मनोभावों को व्यक्त करने का अनूठा तरीका रखता हो, उसके जीवन का मूलाधार आत्म-संतुष्टि है।

आज के बदलते हुए परिवेश में हर एक बच्चा कला को अपनाना चाहता है पर स्कूली बस्तों को ढोने के पीछे वह मात्र कलाकार बनने का सपना ही संजोये रह जाता है। कला तो मानव जीवन को उपयोगिता प्रदान करती है। कला को हम किन्हीं विवेचनों में बांध नहीं सकते, कला तो सौन्दर्य का साधन है।

महात्मा टाल्सटाय ने कहा कि "कला हमारे जीवन की चेतन अभिव्यक्ति है। हम कलाकृति में अपना प्रतिबिम्ब देखते हैं एवं समाज का प्रतिबिम्ब देखते हैं। यह प्रतिबिम्ब स्वयं का होता है। कलाकार का उद्देश्य होता है अपने भोगे हुए यथार्थ को प्रतिबिम्ब कर वह उसमें विश्व की अनुभूति से सादृश्य करता है।

गलतफहमी के शिकार लोग कला को मनोरंजन की वस्तु समझते हैं, लेकिन कला मनोरंजन की वस्तु नहीं वरन् एक कठिन साधना है। कला जीवन का अनुकरण मात्र ही नहीं, मौलिक सर्जना है, सृष्टि है। कला भावनाओं को दूसरों पर प्रतिष्ठित करने का साधन है। सीमायें जितनी तीव्र एवं आकर्षक होंगी कला उतनी ही पूर्ण होगी। यथार्थ तथा कल्पना मानव जीवन की एक सशक्त आवश्यकता है।

कला तकनीक जानना एक बात है, उसका सृजन दूसरी मीमांसा तीसरी एवं कला शिक्षण चौथी। कलाकार तो कैनवास पर अपनी अनुभूति के अनुसार अपनी अंतरात्मा की तृप्ति के लिए जब कला का चित्रण करता है तो उसे ध्यान नहीं रहता है कि उसके पास कौन है? वह कहाँ बैठा है? बस वह तो सौन्दर्य में मुग्ध है। कला को सच्चे अर्थ में समझने के लिए उसकी आत्मा और लक्ष्य को समझना आवश्यक है। सच्चे कलाकार के लिए कला एक पवित्र साधना है।

लोक कला आज हर एक कलाकार को अपनाना चाहिए क्योंकि लोक कला हमारे जीवन को राष्ट्र की श्रेष्ठ परम्पराओं से जोड़ती है, साथ ही भाषी कलात्मक विकारा का समुचित माध्यम भी प्रस्तुत करती है।

कलाकार तो वह शिव है जो विश्व भर का विष स्वयं पीता है और पीयूष की वर्षा जनमानस के लिए करता है।

कला को किसी भी उम्र में अपनाया जा सकता है, क्योंकि सच है कि कलाकार मरने से से कुछ घण्टे पहले ही बूढ़ा होता है।

विश्व में कोई वस्तु शाश्वत् नहीं है परन्तु कला अमर रहेगी। जब तक संसार में मनुष्य का अस्तित्व है कला का अस्तित्व रहेगा।

□ **सरनजीत सिंह**
टी० सी०/क्रेन शॉप
पू० रे०, जमालपुर

* * *

कवयित्री श्रीमती आभा प्रदीप कुमार को साहित्यिक सम्मान

जमालपुर दिनांक 25-12-97 की सुबह नगर साहित्य परिषद् के संस्थापक महासचिव अशेक अश्क को घर-घर जाकर साहित्यिक सम्मान समारोह में उपस्थित होने हेतू निमंत्रण पत्र देते, आग्रह करते प्रायः शहर के सभी प्रबुद्ध लोगों ने देखा, उन्हें आश्वस्त किया किन्तु सुबह से धूप खिली रहने के बावजूद प्रभु की ऐसी लीला रही कि दिन के तीन बजे से जो ठंडी हवा चली-अगले दिनों तक बनी रही। उसी शाम चार बजे अनचाहे उग आए कुकुरमुत्ते की तरह शहर में कई जगहों पर गोली चल गयी और लोग घरों में दुबक गए फिर भी श्री प्रदीप कुमार (निर्देशक–इर्मी) की अध्यक्षता, श्री बी० पी० सिंह (कारखाना कार्मिक पदाधिकारी) श्री अशोक कुमार (जिला भण्डार नियंत्रक) श्री ज्योति कुमार एवं श्री शशिभूषण (व्याख्याता–इर्मी) श्री अनिमेष कुमार सिन्हा (बरिष्ठ मंडल यांत्रिक अभि०) श्री यतीस कुमार (प्रशिक्षु-प्रबन्धक) की उपस्थिति में आमंत्रित कवियों ने क्रमशः श्री मती आभा प्रदीप कुमार को पुष्प अर्पित कर उनका साहित्यिक सम्मान किया।

इस अवसर पर बोलते हुए सुप्रसिद्ध कहानीकार चर्चित गजलगो श्री अनिरूद्ध सिन्हा ने कहा–''अपने भीतर संचित संवेदनाओं के बाद भी आदमी जब मानवीय मूल्यों की रक्षा करने में चूकने लगता है तब वह अपने नये तेवर के साथ जन मानस के बीच प्रकट होता है। कुछ ऐसे ही सच आभा प्रदीप कुमार की कविताओं में सामने आए हैं।

अपने एकल काव्य पाठ के आरंभ में श्री मती आभा प्रदीप कुमार ने आँखे, जंगल, हस्ताक्षर, मीठा फल, इब हूँ मैं, अर्थी और अंतिम चाह–कविताओं का सस्वर पाठ किया।

इन कविताओं पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए संस्था के अध्यक्ष एवं स्थापित रचनाकार एवं युवा कवि श्री अनिमेष कुमार सिन्हा ने कहा–''मात्र इतनी कविताओं में ही श्रीमती कुमार की दृष्टि का बहुआयामी संसार उजागर होता है। कविताएँ कुछ अलग हटकर सोचने पर विवश करती हैं। अजनबी विम्बों एवं उपमानों की आँख मिचौली नहीं हूँ जिस कारण कविताएँ सीधे-सीधे भीतर तक उतर जाती हैं। कविताओं में जितने भी बिम्ब और प्रतीक हैं, वे सहज ही भावानुभूति के साथ खिंचे चले आये हैं और सबसे अहम बात है कि कविताएँ संतुलित हैं, न तो ठहराव है और न ही उतनी तीव्रता कि पाठकों के स्मृति धरातल से छिटककर आगे बढ जाँए। कविताएँ ठहरती हैं, गुदगुदाती हैं फिर आगे बढ़ती हैं, जाहिर है कवयित्री यथार्थ का आवरण नहीं ओढ़ती, उसमें जीती हैं, अनुभव करती हैं और जो प्राप्त होता है उसे कविता के माध्यम से कहती हैं।

लोकभाषा के कवि रामदेव भावुक ने कहा श्रीमती आभा प्रदीप कुमार की कविताओं में स्वस्थ जनवादी परम्परा का निर्वाह हुआ है। समाज में घटनेवाली तमाम घटनाओं के प्रति कवयित्री विशेष रूप से जागरूक नजर आती हैं। पाठकों को यथार्थ से परिचय करवाती हैं।

युवा कवयित्री द्वारा स्मृति ने कहा कि–''श्रीमती आभा प्रदीप कुमार ने अपनी कविताओं में विस्तार की अपेक्षा गहराई पर अधिक बल दिया है जिससे बोझिल हो जाने का खतरा नहीं हैं।''

जमालपुर की चर्चित महिला रचनाकार श्रीमती कुसुममणि त्रिपाठी 'कुसुम' ने इन शब्दों में अपने भाव व्यक्त किए–

पलकों के कोर पर रहते हैं आँसू
मन के हर मोड़ पर रहते हैं आँसू
दुःख में कोई हीत नहीं, आँसू सा मीत नहीं
सुख-दुःख में साथ निभाते हैं आँसू।

युवा कवि श्री राजेन्द्र सिंह 'राजेन्द्र' ने श्रीमती आभा प्रदीप कुमार के सम्मान में एक छन्द समर्पित किया–

''आकाश कुसुम सा खिल जाना
कविता के संग हिल मिल जाना
हो अमिट लेखनी की प्रतिभा
कविता बनके साहिल पाना।''

इस अवसर पर उपस्थित अन्य आगत अतिथियों, कवियों के प्रति आयोजक कवि, कहानीकार एवं बटोहिया के सम्पादक श्री अशोक 'अश्क' ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

□ **भूषण कुमार**

* * *

मानवता की पुण्यभूमि सौन्दर्यमयी कन्याकुमारी

□ समीरण दीर्घांगी, फोर्ज शॉ

संस्कृति क्या है ? देश की जाति, धर्म, आचार-विचार, कला-कौशल, सभ्यता आदि संस्कृति कहलाती है। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है। भारतीय संस्कृति की विशेषता है उसकी आध्यात्मिक भावना। ईश्वर की सूक्ष्म सत्ता सारी सृष्टि का संचालन करती है तथा हम सब में विद्यमान है। हम सब प्राणी उसी के रूप हैं, उसी परमपिता की संतान हैं। भारतीय संस्कृति जीवन और जगत के प्रति, सब धर्म के प्रति उदार मनोभाव रखती है। उसके अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन सबकी प्राप्ति ही मानव-जीवन का लक्ष्य है।

ईश्वर क्या है, कहाँ है इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए भारतीय संस्कृति के महान साधक स्वामी विवेकानंद जी ने हिमालय से कन्याकुमारी तथा सारे विश्व का भ्रमण किया था। उनके अनुसार मनुष्य का आत्मिक विकास ही ईश्वर दर्शन है। पुण्यभूमि भारत में ही है ईश्वर का मूल खजाना। हम सब हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, उन्हीं परमपिता की संतान हैं, इसलिए स्वामी जी ने कहा था कि जीवों की सेवा करना, हर जाति और धर्म के प्रति श्रद्धा, सहानुभूति और प्रेम प्रदर्शन ही ईश्वर की सेवा है। उन्होंने बताया था कि अपने आपको जागना होगा। कन्याकुमारी की महान शिला पर बैठकर उन्होंने अनुभव किया था कि ईश्वर को ढूँढ़ने के लिए संसार छोड़कर जाने की आवश्यकता नहीं है, सभी के साथ प्रेम श्रद्धा और लगन ईश्वर दर्शन की अनुभूति है।

विश्व विख्यात जर्मन लेखक मैक्समूलर लिखते हैं यदि मैं यह खोजने के लिए सारे संसार पर अपनी दृष्टि दौड़ाऊँ कि वह कौन-सा देश है जो प्रकृति की समस्त सम्पदा-शक्ति और सौंदर्य में सम्पूर्ण है और कहीं-कहीं पृथ्वी पर मानो स्वर्ग ही है, तो मुझे भारत की ओर संकेत करना पड़ेगा।" भारतवर्ष का उत्तर, दक्षिण, पू पश्चिम कोई ऐसा कोना नहीं है, जहाँ सुदूर एकान्त में भी ह प्राकृतिक सौन्दर्य लुभाता नहीं है। उत्तर में प्राकृतिक सौन्दर्य व मुकुट हिमाच्छादित हिमालय और सुदूर दक्षिण में केरल व प्राकृतिक सुन्दरता पर हमें गर्व है। भारत के अप्रतिम सौन्दर्य व मूल खजाना है कन्याकुमारी जिसके चरणों में हिन्द महासा हमेशा अट्टहास कर रहा है तथा जिसकी दाईं ओर अरब सा तरंगित हो रहा है। कन्याकुमारी के पत्थर पर खड़े होकर जि ओर भी दृष्टिपात किया जाय केवल जल ही जल दिखायी पड़ता जिसका नील तरंग देखकर हृदय एक अनिर्वचनीय भाव उल्लसित हो उठता है और विवेकानन्द जी के स्वर में स्वर मिला कहने लगता है, "रे मानवत जाति, उठो, जागो, अपने को जगाउ द्वेष छोड़ो, याद रखो हम सब एक हैं, ईश्वर है तो यहाँ है।" जी का अपना ही एक संगीत है, संस्कृति है। वैसे ही सागर का अपना एक संगीत है, संस्कृति है। लहराकर वह कहता है–" सब की एक ही जननी है–भारतमाता, उसी का शीतल वायु, पानी, हम सब के लिए संजीवनी सुधा है।"

स्वामी विवेकानंद जी ने कन्याकुमारी में जिस शिला समाधि लगायी थी, वह महाशिला अरब सागर, हिन्द महासा और बंगाल की खाड़ी इन तीनों की मिलन बिन्दु के रूप में प्र होती है। तीनों सागरों की एकता का मिलन-संगीत सुनते हुए प्रभु की गोद में स्वामीजी ने समाधि लगायी थी। सौन्दर्य कन्याकुमारी का अपार संगीत है :–हे मानव सम्प्रदाय ! एक मेरे चरणों में खड़ा होकर कहो "मैं मनुष्य हूँ"। मेरी कोई ज नहीं है, हम सब एक हैं, भाई हैं।

* * *

हिन्दी जन–जन की भाषा है, सबको जोड़ती है। अतः घर, बाहर और दफ्तर में हिन्दी शब्दों का ही व्यवहार करें।

लघु कथाएँ

1. ग्रीन सिग्नल

आज भी सुबह-सुबह तरोताजा होकर दारोगा साहब "खीचड़ाल" बर्दी में पुलिस चौकी के बरामदे में कुर्सी डलवाकर बैठ गये। यहाँ के कई लाभ हैं, पहला ऊँची जगह होने की वजह से जाड़े की गुनगुनी धूप वहाँ जरा सवेरे पहुँच जाती, जिसका वे मुफ्त में लुत्फ उठाते। दूसरा, कुर्सी पर बैठे-बैठे मात्र आँखों की पुतलियाँ दो समकोण तक घुमाकर आने-जाने वाले सभी वाहनों पर गिद्धदृष्टि व लीपवाला पर वक्रदृष्टि रखते। तीसरा, उधर से कभी-कभार गुजरनेवाले आला अफसरों की नजर में चुस्त-दुरुस्त और सक्रिय दिखते, और भी कई लाभ·····प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष। कथनीय-अकथनीय।

दारोगा जी आराम से टांग पर टांग चढ़ाकर अपनी घनी मूंछों पर ताव दे रहे थे। पर आज न जाने क्यों उनकी दायीं मूंछ रह-रहकर नीचे झुक जाती, जबकि वे बार-बार पिजाकर ऊपर कर रहे थे।

अचानक उनकी आँखें चमकी। फूलगोभी से उचम् उचलदर एक ठेला धीरे-धीरे आता दिख पड़ा, देसला गोभी अभी नया-नया निकला था। दारोगा जी की पतली जीभ से गोभी की मसालेदार सब्जी का चटपटा स्वाद छलक पड़ा। उन्होंने सिपाही रामधन को पुकारा। रामधन भागा-भागा आया और फिर, आँखों ही आँखों में ईशारा·····

ठेला धीरे-धीरे आकर पुलिस चौकी से थोड़ा आगे जाकर रुक गया। ठीक इसी समयांतराल में रामधन ठेले के पास जा पहुँचा। ठेलेवाला ढेर के ऊपर रखी चार-पाँच झंडीमार्का गोभियाँ देने लगा, परन्तु रामधन ने लो क्वालीटी की गोभियों को देखकर आँख तरेरी पाँच-छः घटिया-घटिया गालियाँ देकर, छः सात बढ़िया-बढ़िया फूल ढेर के नीचे से खींच निकाला। पलटकर वह दारोगा जी से नजरें मिलाते मुस्कुराते लौटने लगा। ठेलावाला आगे बढ़ने हेतु याचनाभरी दृष्टि से दारोगा जी की ओर देखा।

इस बार दारोगा जी ने दायीं मूंछ को जोरदार पिजाया और उंगलियां हटायीं। अलबत्ता मूंछ ऊपर की ऊपर ही रह गई। ठेलेवाले के लिए ग्रीन सिग्नल हो चुका था।

2. खून-खून का अंतर

डॉक्टर साबह जैसे ही अपने कक्ष में पहुँचे वह भी पीछे-पीछे जा घुसा और उनके समक्ष एक प्रश्न चिन्ह की तरह खड़ा हो गया। "देखो जी, तुम्हारा ब्लड रिपोर्ट मैंने देख लिया है। तुम्हारे बेटे को तुम्हारा खून नहीं चढ़ाया जा सकता। जल्द से जल्द दो बोतल खून का प्रबंध·····"

"काहे डाक्टर बाबू, हम्मर खून काहे नै चढ़तै हम्मर बिटवा के!" वह अधीर हो उठा।

"दरअसल तुम्हारा ब्लड ग्रुप "बी" पोजिटीव है, जबकि तुम्हारे बेटे का ए-निगेटीव, इसीलिए समझे।

हाथ जोड़े उसने न में सिर हिलाया। वहीं खड़े कंपाउंडर साहब ने समझाने का जिम्मा खुद ले लिया, "सुनु बाबा खून चार ग्रुप के होवै हैं-ए, बी, एबी, आरू ओ. फेरू सबके पोजिटीव आरू निगेटीव। जेक्कर ग्रुप जोन ग्रुप के होवै है ओकरा वही ग्रुप के खून चढ़ाल जा है। तोहर आरू तोहर बेटवा के खून ग्रुप अलग-अलग ग्रुप के हून। यही वास्ते तोहर खून ओकरा नै चढ़ाल जैतुन, समझलौ कि नै?"

इस बार अपना सिर हाँ में हिलाया, "हाँ बाबू, अब कुछ-कुछ समझलिये! पहिले तो हम यही जानते हैलिये कि सबके खून लाल हुवै है। पर आप बाबू लेग तो एकरा ऐता बांट देलू कि खून-खून में भी।

अतंर हो गेलै, बाप-बेटा, माय-माय सबके खून अलग हो गेलै-"कहता-कहता वह कक्ष से निकलने लगा।"

उसकी बात का आशय समझकर वहाँ पर के सभी लोग स्तब्ध रह गए·····डॉक्टर साहब भी।

3. यूज

नई-नई शादी हुई थी उसकी हनीमून मनाने किसी हिलस्टेशन पर जाना उसके वश की बात तो थी नहीं, तो फिलवक्त उसने अपनी नई-नवेली दुल्हन के साथ कोई रोमांटिक पिक्चर देखने का मन बनाया। इसी सप्ताह कोणार्क टॉकिज में एक पिक्चर लगी थी-दिलवाले दुल्हनियाँ ले जायेंगे। जवाँ दिलों के लिए इससे अच्छी पिक्चर भला और कौन-सी होती। सो रिक्शा किया और चल पड़े अपनी प्यारी दुल्हनियाँ के साथ।

सिनेमा हॉल का बाहरी दृश्य कुछ अजीबोगरीब था। हरेक टिकट काउंटर के सामने रेलमपेल मची थी। जिसे टिकट मिल जाता उसकी तो मानो किस्मत ही खुल जाती। उसे लगा आज अपनी दुल्हनियाँ के साथ पिक्चर देखने के अलौकिक सुख से वंचित रह जायेगी, क्योंकि लाईन में लगकर टिकट मिलने से तो रहा।

अचानक उसके कम्प्यूटरी दिमाग में एक योजना कौंधी, उसने वाईफ को दो टिकट का दाम थमाते हुए काउंटर के साईड से टिकट लाने को पुचकारा, क्योंकि वहाँ लेडिजों को साईड से टिकट लाने की कुछ छूट सी दिखायी पड़ी। पहले तो वह सकपकायी, परन्तु शीघ्र ही पति के आदेश को सर-आँखों पे रखकर काउंटर की ओर बढ़ गई····भीड़ से बचते-संभलते इधर वह पान की दुकान पर खड़ा पान गुलाते हुए वाईफ का मुआयना करने लगा।

कुछ ही देर में लेडिज फर्स्ट का लाभ लेकर वह लौटती दिखी। उधर शर्म संकोच से दुल्हनियाँ के गाल-लाल थे, इधर पान से दूल्हे महोदय के होंठ। वह गौरवान्वित हो रहा था कि वह वाईफ को यूज करना बहुत जल्द सीख गया।

□ **विजय कुमार गुप्त**
लिपिक, कार्मिक विभाग
रेल इंजन कारखाना, पू० रे० जमालपुर

* * *

आदर्श घास के मैदान (लॉन) की स्थापना कहाँ और कैसे करें ?

घास का मैदान (लॉन) स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण बातें

हरियाली अलंकृत उद्यान का एक बहुत ही आवश्यक अंग है। हरियाली की अनुपस्थिति में कोई भी अलंकृत उद्यान अधूरा कहा जा सकता है। वैसे स्थानों पर हरियाली का प्रतिपादन कठिन अवश्य होता है जहाँ ग्रीष्म ऋतु में गर्म तथा तेज हवा चलने से घास के पौधे सूख जाते हैं। फिर भी पानी की समुचित व्यवस्था रहने पर घास को इस प्रकार के मौसम में भी हरा-भरा रखा जा सकता है। अतः आदर्श हरियाली के लिए निम्नांकित सुझावों का अनुपालन अवश्य करें।

1–स्थान का चुनाव :

1. हरियाली लगाने के लिए जो स्थान चुना जाये, वह पूर्णतः खुला हुआ होना चाहिए।
2. उस स्थान पर धूप प्रायः पूरे दिन रहती हो।
3. हरियाली लगाने हेतु थोड़ी ऊँची भूमि ठीक समझी जाती है, जिससे वर्षा का पानी नीचे उतर जाये और घास की जड़ को नुकसान नहीं पहुँचे।
4. जहाँ तक हो सके भूमि दोमट या बलुई-दोमट हो। वैसे तो लगभग सभी प्रकार की मिट्टियों में कुछ साधनों के साथ घास को उत्पन्न किया जा सकता है।
5. चुने हुये स्थान की भूमि अधिक अम्लीय या क्षारीय नहीं होनी चाहिए।
6. स्थान के पास पानी तथा जल निकास की सुव्यवस्था होनी चाहिए।

2–भूमि की तैयारी :

ग्रीष्म ऋतु में जब धूप तेज हो, मिट्टी को 6 इंच अथवा इससे गहरा खोद कर 15, 20 दिनों के लिए खुली छोड़ देनी चाहिए। इस प्रकार से भूमि में उपस्थित खर-पतवार, कीट तथा बीमारियों के जीवाणु पूर्ण रूप से नष्ट हो जायेंगे। इस क्रिया के बाद भूमि को 2-3 बार और पलट कर ढेले इत्यादि तोड़कर चौरस कर देना चाहिए।

1. **हदबन्दी क्रिया :** समूची भूमि को कुछ हिस्सों में बाँट कर प्रत्येक हिस्से को चारों तरफ से मेड़ द्वारा घेर दें तथा बाद में 5-75 सें०मी० गहरा पानी भर दें। इस प्रकार से मोथा तथा अन्य खरपातवारों के बीज उग आयेंगे, जो गुड़ाई करके नष्ट कर दिये जायेंगे। यह क्रिया तीन-चार बार दोहरायें, जिससे सभी उपस्थित खर-पतवारों के बीज उगकर नष्ट हो जायें।

हदबंदी की अंतिम क्रिया करने से पहले कम्पोस्ट डालक भूमि में अच्छी प्रकार से मिला दें, फिर पानी भरकर गुर कर दें, जिससे सभी उपस्थित खर-पतवारों के बीज नष्ट जायें। घास की जड़ों के उचित विकास के लिए सुपर फॉस्फे भूमि के ऊपरी 10 से० मी० गहरी मिट्टी में मिला दें। कम्पो 100 क्विंटल और सुपर फॉस्फेट 7-8 क्विंटल प्रति हेक्ट डाले। अम्लीय भूमि होने की स्थिति में आवश्यकतानुसार चू का भी प्रयोग करें।

2. **भूमि को समतल बनाना :** भूमि की तैयारी करते समय उसक लगभग समतल बना दें। पुनः घास लगाने के पूर्व मिट्टी क ठीक तरह से अवश्य ही समतल बना दें। भूमि को खूँटि के द्वारा अथवा डम्पी लेवल की सहायता से समतल बना जा सकता है।

घास की किस्में : वैसे घास के बीजों का चयन कर चाहिए जिसमें निम्नलिखित विशेषतायें हों :

1—घास के बीज अंकुरण में कम समय लेते हों।
2—घास की वृद्धि शीघ्र होती हो, जो थोड़े ही समय में सत को ढक ले और सुन्दर प्रतीत होने लगे।
3—जिसमें कटाई सुगमतापूर्वक की जा सके।
4—यह सूखा, बीमारियों तथा निम्न तापक्रम के लि प्रतिरोधी हो।

प्रचलित किस्में : गूज ग्रास, जैपनीज लौन ग्रास, फिसकु डाइहोन्ड्रा रीपेन्स, स्मौल ऑक्सीजन तथा ट्रीकोलयम रीपे आदि।

लगाने के तरीके :

1. बीज द्वारा
2. घास के टुकड़ों द्वारा (टरफिंग)
3. टफ पलासटरिंग
4. डीबलींग

□ **ओम प्रकाश सिं**
मुख्य कल्याण निरी
कल्याण कार्या
पूर्व रेलवे, जमाल

* * *

कहानी

कितनी ऊँचाई-कितनी गहराई

कई दिन बीत गये पर सुदर्शन के आंसू नहीं थमे। रह-रहकर आंसुओं की धारें आती और आंखों से होकर गालों तक बिखर जाती। याद है, पति की मृत्यु पर भी उसे इतना रोना नहीं आया था। ऐसा नहीं कि उसे पति से उतना प्यार नहीं था। लेकिन, इस बात का अहसास कि पति देश की खातिर कुर्बान हुए हैं, उसे सुकून मिल जाता था। पति के चले जाने से उसे दुख तो था, पर पश्चाताप नहीं था।

सुदर्शन की दुनियां बहुत छोटी थी। पति अमर सिंह और पुत्र बलवीर सिंह–बस। पति की मौजूदगी में उसका परिवार और बढ़ सकता था, पर पति तो भारत-चीन युद्ध में ही शहीद हो चुके थे।

पति की मृत्यु के बाद सुदर्शन काफी घबरा गई थी। उसका बलवीर बहुत छोटा था, केवल 2 वर्ष का। उसकी जवानी भी छोटी ही थी, केवल पाँच साल की। पति की गैरमौजूदगी में जवानी के दिन तन्हाई को काटना और बलवीर को अच्छी तालिम दिला कर अच्छा इंसान बनाना–ये दोनों उसे भयभीत कर रहे थे। लेकिन, धीरे-धीरे सब ठीक हो गया। सुदर्शन को एक स्कूल में पढ़ाने का काम मिल गया, जिससे बलवीर भी पढ़ने लगा और जवानी के दिन भी बच्चों के बीच धीरे से खिसक चले।

समय बीतता गया.....। बलवीर स्कूल से कॉलेज में जा पहुँचा। सुदर्शन को लगा कि उसके दुख के दिन बीत गये। जो घर पति की मृत्यु के बाद खाली-खाली-सा नजर आता था, अब वही घर भरा-भरा-सा नजर आने लगा। सुबह-शाम बलवीर के आये-गये दोस्तों से घर की खामोशी दम तोड़ने लगी, वातावरण महकने लगा और सुदर्शन की तनहाई जाती रही।

बलवीर के कॉलेज में दाखिल होते ही सुदर्शन उसकी ओर से निश्चिंत हो गयी। वह समझ बैठी कि उसका बलवीर काबिल हो गया है, हानि-लाभ समझने लगा है, इसलिए वह उससे अलग-थलग रहने लगी।

इधर बलवीर का सम्बन्ध गलत युवकों से हो गया। वह आतंकवादियों की गुप्त बैठकों में शरीक होने लगा। माँ से शैक्षणिक यात्रा का बहाना बनाकर तीन महीने गायब रहा और गुप्त प्रशिक्षण लेकर लौटा। फिर, आंतक फैलाने की नई-नई योजनाओं को मूर्त रूप देने लगा। और इस तरह वह बलवीर सिंह से "बीरा" बन बैठा।

एक दिन बलवीर ने अपनी माँ से कहा–"माँ, मैं कुछ दिनों के लिए दिल्ली जाना चाहता हूँ।"

"क्यों, दिल्ली में क्या है, हाल में ही तुम बाहर से लौटे हो। आखिर, बात क्या है। क्या पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं जमता।"

"पढ़ाई-लिखाई तो जीवन भर चलता रहेगा, माँ.....।

मैं चाहता हूँ कि कहीं नौकरी कर लूँ। तुम काम करती हो, मुझे अच्छा नहीं लगता। दिल्ली में एक दोस्त है, जिनके पिताजी अच्छे ओहदे पर हैं। हो सकता है, जाने से मेरा काम हो जाय।"

"मैं तो चाहती थी कि तुम और आगे पढ़ो। खैर, तुम्हारी मरजी।".....इतना कहकर सुदर्शन अपना काम करने लगी और बलवीर दिल्ली जाने की तैयारी में जुट गया।

एक दिन सुदर्शन नहा-धोकर आंगन में बैठी बाल सुखा रही थी और सोच रही थी कि एक सप्ताह गुजर गये, बलवीर आया नहीं। अचानक दरवाजे पर इन्स्पेक्टर शर्मा को खड़ा देख सकपका गई। वह उठकर दरवाजे की ओर बढ़ी कि इन्स्पेक्टर ने छोटा-सा प्रश्न किया–"बहनजी, क्या यह आपका मकान है ?

"जी, हाँ....आइये....बैठिए।" .....कुर्सी की ओर इशारा किया।

"आज स्कूल.....। ओ, आज तो रविवार है।" .....इन्स्पेक्टर ने अपनी भूल सुधार करते हुए कहा।

"कहिए, कैसे आना हुआ ?"

"एक उलझन में पड़ा हूँ, बहन जी।"

"कहिए.....।"

"क्या, यहाँ कोई "बीरा" नाम का युवक रहता है ?

"बीरा....।"

"हाँ.... ।"

"नहीं तो,.....पर, बात क्या है ?"

"वह आतंकवादियों के गिरोह में रहता है। उसी की मुझे तलाश है। आपने अखबारों में दिल्ली वाली खबर पढ़ी होगी। इस बम-विस्फोट में उसी का हाथ है।"

"लेकिन, उस समय पुलिस कहाँ थी ?"

"पुलिस तो सक्रिय थीं, पर वह भाग निकलने में कामयाब रहा। हाँ, वह घायल हो गया है, पैर में कहीं गोली लगी है।"

"लीजिए, चाय पीजिए।"

"वाह, आपने बातों ही बातों में चाय भी बना डाली।"

.....मुस्कराते हुए इन्स्पेक्टर ने कहा और चाय पीने लगा। चाय पीते-पीते उसने पूछा.....।

"मेरी बेटी पुष्पा आजकल कैसा पढ़ रही है ?"

"ठीक तो है, पहले से काफी अच्छी....इस वर्ष तो अपनी कक्षा में प्रथम भी आई है। क्या आपने उसकी प्रगति-रिपोर्ट नहीं देखी ?"

"इस पुलिस की नौकरी में वक्त कहाँ है, बहन जी, कि अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का जायजा लिया करूँ। और, उस पर भी पंजाब की पुलिस। मैंने तो उसे आप पर छोड़ दिया है।"

"ठीक है, जब आपने उसे छोड़ दिया है, तो मैंने भी उसे थाम लिया है।"

सुदर्शन के इतना कहते हीं इन्स्पेक्टर हँसने लगे और हँसते-हँसते गली में उतर गये।

दूसरे दिन सुबह जब सुदर्शन जगी तो उसने देखा कि बलवीर के कमरे में रोशनी हो रही है। वह उस ओर बढ़ गयी और उसने अन्दर झांककर देखा। चार युवक आसपास बैठ बलवीर से पूछताछ कर रहे थे। बलवीर का एक पाँव चादर से बाहर था जिसपर पट्टी बंधी थी। बलवीर ने घड़ी देखकर उनलोगों से कुछ कहा और वे लोग कमरे से निकल गली में गुम हो गये।

यह सब देखकर सुदर्शन के मन में शंका के बीच अंकुरित होने लगे। कहीं बलवीर ही तो "बीरा" नहीं है.... यह भी दिल्ली गया था....रात में लौटा है....पैर में पट्टी है ....असमय में लोग आते-जाते हैं,.....गुफ्तगू करते हैं.....। वह सोचती हुई अपने कमरे की ओर बढ़ गई और दरवाजा खोल कर कमरा साफ करना चाह ही रही थी कि इन्स्पेक्टर शर्मा फिर आ धमके। "माफ कीजिए, बहन जी, मुझे फिर आ जाना पड़ा। अभी इस गली में कुछ नये लोगों को आते-जाते देखा है ?"

"हाँ, कुछ देर पहले तो देखा था।"

"तब, जरूर इसी गली में कहीं "बीरा" रहता है। आपका लड़का कहाँ है ?

इस प्रश्न की सुदर्शन को आशा नहीं थी। वह सन्न रह गयी। फिर, अपने को संयत करके उसने कहा—"वह अपने कमरे में सो रहा है।"

"क्या मैं उससे मिल सकता हूँ।"

"आइये....।" सुदर्शन बलवीर के कमरे की ओर बढ़ चली और इन्स्पेक्टर पीछे-पीछे चल पड़ा।

"वह सो रहा है।".....कमरे के अंदर दिखाते हुए सुदर्शन ने धडकते दिल से कहा।

"सुबह कब के हो गयी, फिर भी सो रहा है ?"

"हाँ, नौकरी के लिए दिल्ली गया था, बीमार होकर लौटा है।"

"अच्छा, अच्छा, छोड़िए, फिर कभी आकर बातें क लूँगा।"....यह कहकर वह जाने लगा।

"बैठिए न, चाय बनाती हूँ....।"

"नहीं, बहन जी, फिर कभी।".....वे तेजी से गली में च बने।

सुदर्शन चेहरे के चुहचुहाते पसीने को आंचल से प ही रही थी कि बलवीर कमरे से निकल आया...."कौन था, म किससे बातें कर रही थी ?" "इन्स्पेक्टर शर्मा थे. आतंकवादियों का आना-जाना इस गली में होता है इसलिए उन विश्वास है कि यहीं कहीं आसपास उनका पड़ाव है।"

"आतंकवादी.....? और, इस गली में.....? शर्मा का दि तो खराब नहीं हो गया है।"

"पता नहीं, तुम दिल्ली से कब लौटे...?"

"रात की गाड़ी से।"

"लंगड़ाकर क्यों चलते हो ?"

"दिल्ली स्टेशन पर बम-विस्फोट हुआ था। मैं घबराकर भ और फिसलकर गिर पड़ा। पाव में चोट आ गई है।"

"हूँ....नौकरी का क्या हुआ।"

"कह आया हूँ, व्यवस्था होते ही वे खबर भेजेंगे।"

"यहाँ आस-पास "बीरा" कौन है ?"

"बीरा.....।"

"क्यों, बीरा का नाम तुमने कभी नहीं सुना ?"

"हूँ, ऊँ हूँ.....नहीं तो।"

"सुना है, वह भयंकर आतंकवादी है।"

"तुम्हें किसने कहा।"

"इन्स्पेक्टर कह रहे थे।"

"हूँ....।" .....इतना कहकर उसने गहरी साँस ली और ख्यालों में डुब गया।

कई दिन बीत गये। एक दिन सुदर्शन अपनी कक्षा में रही थी कि स्कूल के सामने एक पुलिस की गाड़ी आ रूकी। इन्स्पेक्टर दौड़ा हुआ आया और सुदर्शन को बाहर बुलाकर कहा। वह बुरी तरह घबड़ा गई। उसने झटपट पुष्पा को लिया और वह गाड़ी में जा बैठीं। इन्स्पेक्टर की कोठी में प ही देखा—पुलिस विभाग के बहुत सारे अधिकारी उदास खड़े बरामदे में तीन लाशें पड़ी थीं....इन्स्पेक्टर शर्मा, उनके पित उनकी पत्नी। किसी ने गोली मारकर घर को श्मशान में दिया था। सुदर्शन फफक उठी, पुष्पा चिल्लाने लगी .....

रात के करीब 12 बजे थे। सुदर्शन बड़ी मुश्किल से को सुला सकी थी। इसी बीच बलवीर दाखिल हुआ और एक को माँ के बिछावन पर देखकर आश्चर्य से पूछा....

"माँ, यह लड़की कौन है ?"

"पहचान सको तो, पहचानो ।"

"मैं तो नहीं पहचानता"...कहता हुआ अपने कमरे की ओर चला गया ।

"यह वही लड़की है जिसके माता-पिता को तूने गोली का निशाना बनाया ।"

"क्या बक रही हो, माँ ?"

"मैं ठीक कह रही हूँ । यह इन्स्पेक्टर शर्मा की लड़की है जो मेरी स्कूल में पढ़ती है । सौभाग्य से यह बेचारी स्कूल जा चुकी थी अन्यथा तुम इसे भी नहीं छोड़ते ।"

"माँ...!" .....बलवीर चिल्लाया"

"चिल्लाने से सत्य की गूंज जब्त नहीं होती ।"

"तुम्हें किसने कहा कि इन्स्पेक्टर शर्मा का खून मैंने बहाया है ?"

"मेरी आत्मा ने...!"

"यह झूठ है ।"

"नहीं, यह सच है । आत्मा झूठ नहीं बोलती । अगर झूठ है, तो मेरे सर पर हाथ रखकर कहो ।"

कुछ देर तक बलवीर मौन खड़ा रह जाता है ।

"इस बच्ची को अनाथ बनाकर तुम्हें कौन-सा सुख मिला ?"

"सुख मिला है । तुम्हें क्या मालूम ?"

"बेगुनाहों के खून से अगर किसी को सुख मिलता है तो, क्या वह इंसान है ?"

"नहीं, वह हैवान है, आतंकवादी है.....यही कहना चाहती हो न ?"

"मैं कुछ कहना नहीं चाहती, सिर्फ पूछना चाहती हूँ कि हत्या करने का अधिकार तुम्हें किसने दिया ? यह हिंसात्मक खेल खेलने का हौसला तुममें आया कहाँ से ? देश की आजादी के लिए, इसकी एकता और अंखडता के लिए कितनों ने अपनी कुर्बानियां दी । वे भी इसी भारत की संतान थे । और, तुम भी उसी भारत के संतान हो, जो इसकी आजादी और अखंडता को आतंक फैलाकर झकझोर देना चाहते हो । ऐसा क्यों ?

"बस करो, माँ....!"

"मुझे माँ कहकर लज्जित न करो ! तुम्हारे पिता ने वतन के लिए कुर्बानी दी और तुम....। ओफ, मैं कितनी ऊँचाई पर खड़ी थी और तुमने कितनी गहराई में ला घसीटा । मैं आतंकवादी की माँ नहीं बनना चाहती, मुझे शहीद की पत्नी ही बनी रहने दो !" इतना कहकर वह रोने लगी और रोती हुई अपने कमरे में लौट आई ।

बलवीर रातभर सो न सका । उसे अहसास नहीं था कि उसके कर्म से माँ के मर्म पर इतनी गहरी चोट आयेगी । वह माँ की बातों पर विचार करता रहा.....देर तक....काफी देर तक....। सुबह जब सुदर्शन जगी तो बलवीर का एक पत्र देखकर चौंक उठीं । "माँ, मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ । तुम्हें जो मैंने ऊँचाई से गहराई में लाया है, इसका मुझे खेद है ।" ....बलवीरा ने लिखा था ।

सुदर्शन विफर उठी, आँखें बरसने लगीं....।

....कई साल गुजर गये । बलवीर लौटकर नहीं आया । पुष्पा अपने नाना घर दिल्ली चली गई और वहीं रहने लगी । इस तरह सुदर्शन की जिन्दगी भटकती नाव की तरह हो गयी । तनहाई के गिरफ्त से बचने के लिए वह स्कूल के कार्यों में अधिकाधिक व्यस्त रहने लगी । छूट्टियों में सहेलियों के घर चली जाती या सुनसान डगर व योंही भटकती । राह चलते सोचती...। पंजाब के इन युवकों को क्या हो गया ? क्यों ये रोज-व-रोज आमलोंगों की हत्याएं करते हैं ? पंजाब के युवक तो देश के लिए कुर्बान होते रहे हैं । फिर, इन्हें क्या हो गया है ? माना, पड़ोसी देश उन्हें गुमराह करते हैं, लेकिन, अपनी भी तो कुछ समझ है । जिस बात को आमलोग भी समझते हैं कि कुछ लोग भारत की एकता-अखण्डता को नष्ट करना चाहते हैं, क्या, इस बात को ये नहीं समझ पा रहे हैं । उनके सोचने का स्तर कितना गिर गया है कि संत लोगों की हत्याएं गुरूद्वारों में जाकर करने में भी नहीं हिचकते । क्या इन्होंने नानक को ठीक से जाना नहीं, गोविन्द सिंह को पहचाना नहीं ? इसी तरह की बहुत सारी बातें सोचती दूर-दूर तक चली जाती....।

एक दिन दिल्ली से खत मिला कि पुष्पा बीमार पड़ गई है । सुदर्शन घबरा गई, मानो, अपनी ही बेटी कहीं बीमार हो । वह तुरंत दिल्ली के लिए चल पड़ी...।

इधर बलवीर कई देशों में घूमता रहा और पनपते आतंकवाद को उसने निकट से देखा । भारत लौटे अभी दो दिन भी न गजुरे थे कि उसका "वॉस" काम लेकर आ पहुँचा और कहने लगा..."बीरा । मेरा ख्याल है, अबतक तुम्हारा जी बहल गया होगा । आज से यहाँ काम शुरू करो ।"

"येस" बॉस । क्या काम है ?".....बलवीर ने सलामी ठोंकते हुए कहा ।

"देखो, वीरा । यों तो हम रोज दस-पाँच लोगों को मारते रहे हैं, पर इससे सरकार के कानों पर जूं नहीं रेंगती । ऐसा करो, कल दीपावली है । बहुत सारे लोग दिवाली मनाने अपने-अपने घरों में लौट रहे होंगे । तुम आज रात अमृतसर मेल को उलट दो ताकि कल हजारों घरों में दीये न जल सकें । आओ, मेरे साथ.....।"

रात का पिछला पहर.....घना अंधकार.....सन्नाटा ही सन्नाटा । "वीरा" अपने साथियों के साथ उस पुल के पास पहुँचा जहाँ काम को अंजाम देना था । घोड़े को नीचे ही छोड़कर दबे पाँव वे ऊपर आये और गश्त लगाते सैनिक पर गोलियां दागी ।

सैनिक ''माँ–'' कहता हुआ पुल के नीचे जा गिरा। सबों ने मिलकर जल्दी-जल्दी बिछी-पटरियां खोल दी और घोड़े पर सवार हो भाग चले।

''बीरा भी उनके पीछ भाग रहे थे, पर कानों में ''माँ'' की अनुगूंज अभी भी गूंज रही थी। इस अनुगूंज ने माँ की यादों को तरोताजा कर दिया। हाथ की लगाम ढीली पर गई और घोड़ा धीरे-धीरे चलने लगा। उसे लगा जैसे माँ पूछ रही हो....बलवीर, कुछ देर बाद गाड़ी उलट जायेगी,. हजारों बेगुनाह मारे जायेंगे, तुम्हें क्या मिलेगा। क्या ये हत्याएं तुम्हें सुकून दे सकेंगी। पगला, यहाँ लोकतंत्र है, और लोकतंत्र में हिंसा का स्थान शून्य है। इसलिए हिंसा के रास्ते कुछ हाथ आने को है नहीं। अगर, खालिस्तान मिल भी जाये तो, क्या तुम सुखी रह सकोगे? पाकिस्तान से पूछो, क्या वह सुखी हो गया? जिस सैनिक की अभी तुने हत्या की, कल उसकी माँ गुरूद्वारे में फक्र से जाकर कहेगी...वाहे गुरु। आपने एक संतान दी थी, मैंने वतन के वास्ते उसे न्यौछावर कर दी। अगर, तुम्हें कुछ हो गया तो मैं कौन-सा मुंह लेकर गुरुद्वारा जाऊँगी। घर में लगा आईना भी मुझे धिक्कारने लगेगा।

इसी बीच गाड़ी की सीटी चीख उठी और बलवीर की तन्द्रा टूटी। उसने घोड़े को गाड़ी की ओर दौड़ाया। वह जैसे ही उछलकर इंजन पर चढ़ा कि सुरक्षा बल की गोली पीठ में आ लगी। गोली की परवाह किये बिना उसने चालक को गाड़ी रोकने पर मजबूर किया। गाड़ी धीरे-धीरे रूकी और बलवीर भी धीरे-धीरे लुढ़क गया। वह बड़बड़ा रहा था–

''आ.....गे....ख.....त.....रा.....है।''

गाड़ी रूकते ही सुरक्षा बल के जवान दौड़े आये। चालक सारी बातें बताई। थोड़ी ही देर में बहुत-सारे लोग उतर आ विचार हुआ, आगे चल कर देखा जाये। आगे-आगे हाथ बत्ती चालक और पीछे ढेर सारे लोग। करीब दो सौ कदम चलते सबने देखा पुल पर पटरियां खुली पड़ी हैं। लोग काँप उठे ....

लाश को इंजन से उतारा गया। लोग हाथ जोड़कर अप श्रद्धा अर्पित करने लगे। इसी बीच उषा आई और अपना र रंजित पुष्प बिखेरने लगी। भीड़ में से अचानक एक महिला चि उठी और लाश से जा लिपटी। लोग समझ गये और कहने लगे...

''मत रो माँ, तुम्हारी कोख धन्य है, जिसने आज हम हज को मौत के मुंह से छीन निकाला है।''

पुत्र को अंतिम विदाई देकर सुदर्शन रात को घर लौटी। शहर में दिवाली थी पर उसका घर मातम मना रहा था दरवाजा खोलकर दीपक जलाया तो सामने पति की तस्व कौंध गई। वह धीरे-धीरे पास गई और रोने लगी। बहुत देर आंसू बहते रहे, वक्ष भींगता रहा। अचानक उसे लगा, जै उसका पति कर रहा हो....''आज रोने का दिन नहीं पगली। लोगों ने आज तुम्हें कितना सम्मान दिया है। तुम फूलों के बीच दिख भी नहीं रही थी। बलवीर तुम्हें जि नीचे ले गया था उतना ही ऊपर ले आया है। तुम उसे माफ दो और अपने आंसू पोंछ लो।'' अनायास सुदर्शन के हाथ अ पोंछने लगे....

राजकिशोर मंडल (मूरखानन्द)
राजभाषा सहायक
पू० रे० (का०) जमालपुर

* * *

लघु कथा

उजाले की ओर

दिनेश भोजन कर ही रहा था कि उसके पिताजी ने बाहर से आते ही दिनेश के बड़े भाई महेश को आवाज दी। पिता की आवाज सुनकर महेश लपक कर पिताजी के पास आ गया, ''जी पिताजी! कुछ कहा आपने?''

अपनी जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर उसमें से एक सिगरेट अपने बड़े बेटे की ओर बढ़ाते हुए पिता ने कहा, ''बेटे महेश! लो·····पियो।''

''क्या!·····सिगरेट!·····पिताजी·····यह आप क्या कह रहे हैं? आप तो जानते हैं कि मैं सिगरेट नहीं पीता। फिर आपने तो स्वयं आज तक सिगरेट को कभी हाथ तक नहीं लगाया।·····और आज·····यह सब क्या है?'' महेश ने आश्चर्य युक्त हकलाते हुए–से स्वर में किसी तरह अपने पिता से पूछा।

''बेटे, जब घर के छोटे सिगरेट पीने लगें तो, हमें चाहिए कि हम उनके सामने सिगरेट पीकर उन्हें ''स्वास्थ्यवर्द्धक टॉनिक'' की स्वतंत्रतापूर्वक पीने की अनुमति प्रदान कर दें। ताकि उन्हें छिपकर न पीनी पड़े।'' पिताजी ने व्यंग्यमय लहजे में कहा

पिता और बड़े भाई के वार्त्तालाप का एक-एक शब्द दि को ग्लानि से भरता जा रहा था। उसके गले से भोजन का कौर तक उतरना कठिन हो गया। ग्लानि के आँसू बाँध तोड़ निकल पड़े और दिनेश भोजन छोड़कर पिता के चरणों में आ गि रूंधे स्वर में बोला, ''पिताजी! मुझे क्षमा कर दीजिए। आज बाद आपको दुबारा सिगरेट नहीं छूनी पड़ेगी।''

□ **सतीशराज पुष्कर**
लघुकथा नगर, महेन्द्रु, पटना–६ (बि

* * *

कार्य संस्कृति के प्रमुख तत्त्व

इस प्रकरण का मुख्य विषय कार्य संस्कृति की परिभाषित अवधारणा है। मोटे तौर पर कार्य संस्कृति वह प्रचलित अवस्था है जिस अवस्था में कर्मचारी किसी संगठन में अपना कार्य सम्पन्न करता है, पर बेहतर जानकारी के लिए एक विस्तृत व्याख्या आवश्यक है।

किसी संगठन में संगठनात्मक मूल्यों, इनकी आधारभूत संरचना और कर्मचारियों द्वारा इनका प्रत्यक्ष ज्ञान, कार्य संस्कृति के प्रारम्भिक स्थल का निर्माण करते हैं। किसी भी तरह, कार्य संस्कृति का अस्तित्व शून्य में नहीं होता, जिस समाज में कोई संगठन विद्यमान होता है, वह समाज तथा उनके सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम कार्य संस्कृति को परिभाषित करने में तथा विकसित करने में मुख्य भूमिका अदा करते हैं।

आधारभूत आयाम जो कार्य संस्कृति को परिभाषित करते हैं, समाज के सांस्कृतिक आयाम हैं जिन्हें निम्न प्रकार से अवधारित किया जा सकता है –

(क) किसी व्यक्ति का प्रकृति से सम्बन्ध
(ख) किसी व्यक्ति का दूसरों से सम्बन्ध
(ग) समय के अनुसार संस्कृति का अनुस्थापन
(घ) क्रियाकलाप के अनुरूप संस्कृति का अनुस्थापन
(ङ) अन्तरिक्ष की अवधारणा।

इस प्रकार वर्तमान कार्य संस्कृति की सांस्कृतिक परीक्षण, दो विभिन्न संगठनों के दो विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश में बहुत ही कठिन होगा, क्योंकि कुछ लोग सफाई पर अधिक जोर देंगे तो कुछ गति पर। कुछ लोग विभिन्न लोगों के विभिन्न व्यक्तिगत व्यवहारों पर बल देंगे तो कुछ समरूपता और सम्पूर्णता पर जोर डालेंगे। यह सांस्कृतिक कारक हैं जो समय को मिनटों में मापने पर बल देते हैं जबकि कुछ लोग इसे मुख्यतः घण्टों में मापते हैं। यह अंशतः भारतीय मानक समय के आधा घण्टा विलम्ब को हास्य रूप में व्यक्त करता है।

कार्य संस्कृति की अवधारणा का अध्ययन करते समय आर्थिक विकास की अवस्थाओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। आर्थिक विकास के इस युग में कार्य-स्थल किसी व्यक्ति के जीवन की परिधियों से इतना दूर हो गया है या पृथक् कर दिया गया है कि अलग से इसके अध्ययन की आवश्यकता आ पड़ी है। पहले संस्कृति व्यापक थी और कार्य-स्थल सामान्य अस्तित्व से भिन्न नहीं था।

संगठन के दायरे में कार्य संस्कृति की अवधारणाओं का अध्ययन सामान्य एवं विस्तृत रूप से निम्न प्रकार किया जाना चाहिए :–

(क) संगठन का मूल उद्देश्य
(ख) संगठन के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दीर्घकालिक रणनीति
(ग) इस कार्य में श्रम-शक्ति की भूमिका।

विशेष रूप से कार्य संस्कृति संरचनात्मक कारकों द्वारा निर्धारित की जाती है, जैसे :–

(क) व्यक्ति विशेष कर्मचारी की भूमिका
(ख) प्रबंधन की भूमिका
(ग) सूचना का प्रवाह
(घ) इन संरचनात्मक आयामों की सामान्य संरचना एवं व्यक्तिगत कर्मचारियों के प्रत्यक्ष ज्ञान।

यदि हम कार्य संस्कृति को समझने के लिए भारतीय रेल को अध्ययन के रूप में लेते हैं तो, हम देख सकते हैं कि –

(क) आदर्श कार्य संस्कृति– यह प्रामाणिकता के समीप है। संगठन की यह सामूहिक अवधारणा है कि काम किस प्रकार सम्पन्न किया जाय।

(ख) व्यक्तिगत दृष्टिकोण– व्यक्तिगत रूप से कर्मचारी चाहे वे अधिकारी हों या कर्मचारी, कार्य संस्कृति को अपने-अपने दृष्टिकोण से देखते हैं, जो दृष्टिकोण अपने या अन्य दूसरे कर्मचारियों के प्रत्यक्ष ज्ञान की भूमिकाओं या कार्यों से प्रेरित होते हैं।

(ग) बाहरी लोगों का प्रत्यक्ष ज्ञान– लोग, जो उपभोक्ता के रूप में रेलवे के संपर्क में आते हैं, वे कार्य संस्कृति को अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर परिभाषित करते हैं। यह बहुत ही एकांगी और सामान्य-स्तर की समझ है और अभाग्यवश यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और विस्तृत प्रचलित समझ है।

इस तरह कार्य संस्कृति की भावना मौलिक रूप से एक प्रमाणित अवधारणा है, जो आदर्श कार्य-दशाओं पर जोर देती हैं। कैसे, एक कर्मचारी दूसरे कर्मचारियों को अपने ग्राहकों को, और अपने प्रबन्धन को प्रभावित करे। वे अपनी कुशलता समय-पालन शिष्टाचार और अपने संगठन के प्रति पूर्ण आस्था को काफी महत्त्व देते हैं।

यद्यपि हमने कार्य संस्कृति की वास्तविक शर्तों को पहले भी देखा है, पर राजनीतिक आर्थिक संरचनाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों की विस्तृत अवधारणा के रूप में भी इसे अवश्य देखा जाना चाहिए।

❑ **विपिन कुमार सिंह**
कारखाना कार्मिक अधिकारी
पूर्व रेलवे, जमालपुर

गज़लें

(१)

मैं जीने लगा जिन्दगी आ गई,
मेरे दामन में सारी खुशी आ गई।
हँसी रूख के जल्वों का जादू है शायद,
तभी तो मुझे शायरी आ गई।
मैं पीने लगा, शोर हर सू हुआ,
'नजर' को भी अब मैकशी आ गई।
ऐशो–इशरत का सामाँ बहुत हो गया,
मगर इन्सानियत में थोड़ी कमी आ गई।

(२)

ग़म क्या है और खुशी क्या है ?
बज़्मे–काएनात में आदमी क्या है ?
लाख चाहा नहीं समझा फिर भी,
ज़िन्दगी क्या है और मकसदे–जिन्दगी क्या है ?
जिस शख्श का चश्मे–बीनाई नहीं,
उसके लिए अँधेरे क्या व रौशनी क्या है ?
ये अलग बात है तू अपने को खुदा समझे,
वर्ना इस जहाँ में तेरी हस्ती क्या है ?
तू जाम को ही समझ बैठा है इक अँगूरी,
तुझे पता ही नहीं, इन आँखों की मस्ती क्या है ?

❑ **नजरूल इस्लाम खाँ**
गंडार विभाग
पू० २०, जमालपुर

140 टन गॉटवाल्ड क्रेन — कार्य संचालन निर्देश

1.0 क्रेन का इरेक्शन (रिगिंग)

1.1 क्रेन के मुख्य इंजन को चलाने के पहले निम्नलिखित तेल और पानी इत्यादि की जाँच करनी है।

(क) हाइड्रोलिक तेल का स्तर

(ख) डीजल तेल का स्तर (केबिन में स्थित गेज से इसका पता लग सकता है)

(ग) गीयर बॉक्स तेल का स्तर

(घ) इंजन लुब ऑयल का स्तर

(ङ) रेडियेटर पानी का स्तर

1.2 हाइड्रोलिक ऑयल पाइप के सारे स्टाप-भाल्व खुले रहने चाहिए।

1.3 अब मुख्य इंजन को चलाकर निम्नलिखित को जाँच करना है : —

(क) इंजन लुब ऑयल प्रेसर

(ख) बैटरी चार्जिंग करेंट (केबिन में दिये गये एम्मीटर से)

(ग) पाइलट सर्किट प्रेसर 30 बार होनी चाहिए।

(घ) एयर (हवा) कां प्रेसर कम से कम 6.5 बार होना चाहिए।

(ङ) क्रेन के चारों तरफ देखकर यह पता कर लें की कहीं भी तेल, हवा और पानी न रिसता हो।

1.4 एक्सल ब्लाकिंग

यह बात ध्यान देने योग्य है कि क्रेन के बोगी में जो स्प्रींग दिये गये हैं, उनका उपयोग क्रेन को इंजन द्वारा खींचने की स्थिति के लिए है। लेकिन जब क्रेन काम कर रहा हो और जब क्रेन अपने ही पावर से चलता हो, तब एक्सल-ब्लाकिंग करना अति आवश्यक है। इस स्थिति में क्रेन के सारे स्प्रींग पूरी तरह दबे रहते हैं।

इसके लिए क्रेन के अण्डर-कैरेज के एक तरफ एक्सल-ब्लाकिंग, कंट्रोल-लीवर दिया गया है। इस लीवर के पास, दो प्रेशर गेज (0 — 600 बार) दिये गये हैं जिनसे एक्सल-ब्लाकिंग-प्रेसर जाना जा सके। साधारणतः एक्सल-ब्लाकिंग-प्रेसर 240 बार के लगभग होना चाहिए। क्रेन के कार्य करते समय एक्सल-ब्लाकिंग प्रेसर को एक निर्धारित कर्मचारी द्वारा सावधानीपूर्वक देखते रहना चाहिए। तेल के रिसाव के कारण यदि एक्सल-ब्लाकिंग प्रेसर में कोई कमी हो तो कंट्रोल-लीवर को दबा कर इसे ठीक कर लेना चाहिए।

एक्सल-ब्लाकिंग करने के लिए निर्धारित क्रम बताया जा रहा है : —

(क) चालक केबिन में स्थित प्री-सेलेक्टर-स्वीच को सामने की तरफ रखना है ताकि हाइड्रोलिक तेल अण्डर-कैरेज में जा सके।

(ख) एक्सल ब्लाकिंग लीवर को तबतक चलाना है जब तक कि सारे स्प्रींग पूरी तरह दब न जाय।

इस तरह एक्सल-ब्लाकिंग हो जाने पर निम्नलिखित कार्यों का सम्पादन एक साथ होता है : —

क्रेन ट्रेभलिंग गीयर लग जाता है।

क्रेन का ब्रेक लग जाता है।

अण्डर कैरेज के किनारे में लगे हुए सभी चौकोर निर्देशकों में लाल निशान दिखाई देते हैं।

1.5 बूम (जिब) का इरेक्शन

(क) प्री- सलेक्टर स्वीच को पीछे की तरफ खींचना है ताकि हाइड्रोलिक तेल काउन्टर-वेट सिलिण्डर की तरफ जा सके।

(ख) क्रेन चालक बायें तरफ के कंट्रोल पैनल में दिये गये निर्धारित लीवर को सामने की तरफ करना है ताकि काउन्टर-वेट गैलोज को निर्धारित ऊँचाई तक उठाया जा सके। गैलोज के निर्धारित ऊँचाई तक पहुँचने पर चालक के केबिन में स्थित चलती हुई पीले रंग की बत्ती स्वयं बुझ जायेगी।

(ग) डेरिकिंग लीवर को पीछे की तरफ खींचें ताकि बूम का पिछला हिस्सा पिन के ऊपर बैठ जाय।

(घ) डेरिकिंग लीवर को खींचना तबतक जारी रखें जबतक कि "ए" फ्रेम पूरी तरह सीधा खड़ा न हो जाय।

(ङ) अब "ए" फ्रेम के पिछले दोनों हिस्सों को निर्धारित पिन के द्वारा सुनिश्चित रूप से जोड़ दें।

(च) मैच ट्रक के ट्रसल से बूम-लॉक को हटा दें।

(छ) बूम को मैच ट्रक के ट्रसल से लगभग 40 सेंटीमीटर ऊँचा उठायें। क्रेन अथवा मैच ट्रक को चलाकर हुक-ब्लाक को बूम के नीचे ठीक सिधाई में ले आवें। **अथवा** बूम को ट्रसल से लगभग 40 सें मी. ऊँचा उठाने के बाद बूम का डेरिकिंग (ऊँचा उठाना) तबतक जारी रखें और साथ ही साथ दोनों हुक ब्लॉक को नीचे की तरफ गिरायें, जबकि हुक-ब्लॉक बूम के नीचे ठीक सिधाई में न आ जाय।

1.6 अब आपका क्रेन बिना काउन्टर-वेट का काम करने के लिये तैयार है अथवा आवश्यकतानुसार काउन्टर-वेट उठाने के लिए तैयार है ।

टिप्पणी — (क) मैच ट्रक को अलग हटाकर रखना

जगह की कमी या अन्य किन्हीं कारणों से अगर मैच ट्रक को हटाना आवश्यक समझा जाय तो इसे उठाकर क्रेन के पीछे, बगल के लाइन या अन्य किसी जगह रखा जा सकता है । इस समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि मैच ट्रक को क्रेन से अलग करने से पहले मैच ट्रक में पार्किंग-ब्रेक (हैण्ड ब्रेक) लगा दिया जाय ।

(ख) बफर को मोड़ना

क्रेन की अपेक्षित त्रिज्या में कमी लाने के लिए क्रेन के बफर को साइड की तरफ मोड़ा जा सकता है ।

2.0 क्रेन का प्रॉपिंग

इसके लिए पहले प्री-सेलेक्टर लीवर को सामने की तरफ रखें ताकि हाइड्रोलिक तेल अण्डर कैरेज में जा सके ।

अण्डर कैरेज के किनारे स्थित ऑपरेटिंग लीवर को चलायें ताकि आउट रीगर बीम बाहर की तरफ खुल जाय ।

दूसरे ऑपरेटिंग लीवर को चलाकर प्रॉपिंग सिलिंडर को नीचे की तरफ करें जबतक कि यह सिलिंडर प्रॉपिंग पैड के ऊपर बैठ न जाय । अब प्रॉपिंग पिस्टन और प्रॉपिंग पैड को निर्धारित पिन के द्वारा जोड़ दें ।

टिप्पणी— यदि संभव हो तो गोलाकार प्रॉपिंग पैड के नीचे चौकोर पैड को भी रखें ।

ऑपरेटिंग लीवर को चलाते हुए क्रेन को (प्रॉपिंग सिलिंडर द्वारा) ऊपर उठायें जिससे कि क्रेन के चक्के रेल से ऊपर उठ जाय ।

अब प्री-सलेक्टर-लीवर को न्यूट्रल अवस्था में कर लें ।

अण्डर कैरेज के किनारे स्थित स्प्रीट लेवल को देखते हुए पूरे क्रेन को समतल की स्थिति में ले आवें । ऐसा करने के लिए आवश्यकतानुसार चारो प्रॉपिंग सिलिंडर को ऊपर या नीचे कर लें ।

3.0 काउंटर वेट को जोड़ना

आवश्यकतानुसार 6 टन, 14 टन और 18 टन काउन्टर वेट (जो कि सामान्यतः मैच ट्रक पर रखे रहते हैं) को मैच ट्रक से उठाया जा सकता है । 5.2 टन काउंटर वेट अण्डर कैरेज पर सामान्यतः रखा रहता है । निर्धारित काउन्टर वेट को क्रेन के सुपर स्ट्रक्चर के साथ जोड़ने के लिए निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना जरूरी है ।

चालक के केबिन में दाहिने तरफ के पैनल में स्थित बूम ब्रीजिंग के स्विच को ऑन करें, जिससे 5 मीटर रेडियस का लिमिट स्विच सर्किट में आ जाये (इस समय 5.5 मीटर रेडियस का लिमिट स्विच सर्किट से बाहर रहता है)

अब सेफ-लोड-इण्डीकेटर (पी. ए. टी.) को स्विच ऑन कर ब्रीज करें । इस समय पी. ए. टी. क्रेन की सुरक्षा का काम न करता है । इस अवस्था में क्रेन को घुमाना (स्लूविंग) न चाहिए ।

(iii) अब मैच ट्रक से एक-एक कर काउन्टर वेट को उठाकर निम्नलिखित तरीके से अण्डर कैरेज पर रखें ताकि निर्धारित काउन्टर वेट को इकट्ठा किया जा सके ।

(क) हॉफ काउन्टर वेट

18 टन वजन को उठाकर 5.2 वजन के ऊपर रखें । इसके बाद 6 टन वजन को उठाकर 18 टन वजन के ऊपर रखें

काउन्टर वेट का संयोजन

सिर्फ फ्री-ऑन रेल की अवस्था में

18 + 6 = 24 टन गैलोज पर और 5.2 टन अण्डर कैरेज पर रखा जायेगा । प्रॉपिंग की अवस्था में

5.2 + 18 + 6 = 29.2 टन गैलोज पर रखा जायेगा ।

(ख) फूल काउन्टर वेट

इसके लिए 5.2 टन वजन के ऊपर 18 टन, 6 टन और 14 टन क्रमशः रखा जायेगा ।

काउन्टर वेट का संयोजन

5.2 + 18 + 6 + 14 = 43.2 टन गैलोज के ऊपर रखा जायेगा । यह 43.2 टन फ्री-ऑन-रेल और प्रॉपिंग दोनों अवस्था में गैलोज पर रहेगा ।

(ग) शून्य काउन्टर वेट

इस अवस्था के समय अण्डर कैरेज पर 5.2 टन वजन रखा रहेगा और गैलोज पर कोई भी वजन नहीं रहेगा

आवश्यकतानुसार काउन्टर वेट के संयोजन के बाद सेफ-लोड-इण्डीकेटर स्विच को ऑफ करना है ताकि फिर से कम्प्यूटर क्रेन की सुरक्षा कर सके । इस अवस्था में कम्प्यूटर को प्रॉपिंग की सही स्थिति का पुष्टीकरण जरूरी है ।

संयोजित काउन्टर वेट के सभी वजनों को आपस में जोड़ दें । इसके बाद बूम को 8 मीटर की रेडियस पर ले आयें और क्रेन को 180° पर घुमाकर रखें ।

अब इसके बाद प्री-सेलेक्टर-लीवर को पीछे की तरफ कर लें ताकि हाइड्रोलिक तेल काउन्टर वेट सिलिंडर में जा सके । अब गैलोज को नीचे की तरफ करें, काउन्टर वेट को गैलोज के साथ जोड़ दें और गैलोज को निर्धा

ऊँचाई तक ऊपर उठायें । इतनी ऊँचाई पर लाने पर चालक के केबिन में स्थित जलती हुई बत्ती बुझ जायेगी । अब बूम के स्विच को ऑफ कर दें ताकि 5.5 मीटर रेडियस लिमिट स्विच फिर से सुरक्षा की सर्किट में आ जाय ।

सावधानी

क्रेन से कार्य करने के पहले निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है : —

यह जाँच कर लें कि सेफ लोड इण्डीकेटर (पी.ए.टी) कार्य करने की स्थिति में है ।

प्रॉपिंग-मोड-सेलेक्टर (स्विच की स्थिति प्रॉपिंग के वास्तविक आधार पर रखा गया है ।)

एक्सियल ब्लाकिंग प्रेसर लगभग 240 बार है ।

कुछ महत्वपूर्ण निर्देश

(क) एक्सियल ब्लाकिंग प्रेसर को एक निर्धारित कर्मचारी द्वारा सावधानी पूर्वक देखते रहना चाहिए । यदि प्रेसर में कोई कमी हो तो कंट्रोल लीवर को दबाकर फिर से इसे 240 बार तक बनाकर रखना चाहिए ।

(ख) काउन्टर वेट को मैच ट्रक से उठाते समय क्रेन को घुमाना (स्लूविंग) नहीं चहिए ।

टिप्पणी — लेकिन 14 टन काउन्टर वेट यदि मैच ट्रक में न होकर अलग वैगन में रखा हो तो इसे उठाने के लिए फुल-प्रॉपिंग करने के बाद ही काउन्टर वेट को उठाया जा सकता है ।

(ग) क्रेन को फ्री-ऑन-रेल 360° के घुमाव और शून्य काउन्टर वेट की स्थिति में 5.2 टन काउन्टर वेट का क्रेन के अण्डर-कैरेज पर रहना अत्यन्त आवश्यक है ।

(घ) क्रेन के फ्री-ऑन-रेल,360° के घुमाव और हाफ काउन्टर वेट की स्थिति में 5.2 टन काउन्टर वेट को क्रेन के अण्डर-कैरेज में ही रखना है और 24 टन काउन्टर वेट को गैलोज में रखना है । क्रेन के कार्य करने की इस अवस्था में,जिब (बूम) का 8 मीटर से ज्यादा रेडियस में रहना अत्यन्त आवश्यक हो ।

(ङ) चालक केबिन में लगाये गये तीनों लोड चार्टों का पूर्णरूपेण दृढ़तापूर्वक पालन करना है ।

(च) गैलोज के चलाने अथवा एक्सियल ब्लाकिंग के बाद फ्री-सेलेक्टर-लीवर को न्यूट्रल अवस्था में रखना आवश्यक है ।

(छ) क्रेन के कार्य शुरू करने के पूर्व यह सुनिश्चित कर लेना आवश्यक है कि कम्प्यूटर ओभर ब्रीज स्विच और बूम ओभर ब्रीज स्विच दोनों ही कार्यरत अवस्था में है ।

(ज) यह देखना आवश्यक है कि काउन्टर वेट निर्देशक बत्ती, गैलोज के साथ लगाये हुए सही काउन्टर वेट को बता रहा हो ।

(झ) इसे देखना आवश्यक है कि पी.ए.टी. को प्रॉपिंग की स्थिति बताने वाली मोड सेलेक्टर स्विच सही प्रॉपिंग की स्थिति बता रही हो ।

5.0 क्रेन का डिरिगिंग

कार्य के समाप्ति पर क्रेन को इंजन से खींचने की स्थिति में लाने के कार्य को डिरिगिंग कहते हैं । इसके लिये क्रमानुसार निर्देशों का विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

(क) एक्सियल-ब्लाकिंग प्रेसर की जाँच करें । 14 टन,6 टन और 18 टन काउन्टर वेट को मैच ट्रक में रखें । 5.2 टन काउन्टर वेट को निश्चित रूपेण अण्डर कैरेज पर ही रहने दें ।

(ख) बूम को 16 मीटर की रेडियस तक ले आयें । इस समय 16 मी.लिमिट स्विच और पी.ए.टी. द्वारा बूम को नीचे की ओर जाने से रोकेगा । अब बूम ओभर-ब्रीज-स्विच और कम्प्यूटर ओभर ब्रीज स्विच को इन करें, जिससे बूम को और नीचे की ओर लाया जा सके ।

(ग) मेन और ऑक्जीलियरी हूक को निर्धारित ऊँचाई तक ऊपर ले जायँ ।.निर्धारित ऊँचाई तक पहुँचने पर इनका और ऊपर उठना बंद हो जायेगा । अब बूम को नीचे की ओर ले जायँ जबतक कि मेन और ऑक्जीलियरी हूक, मैच ट्रक के निर्धारित स्थान पर न चला जाय । इसके बाद भी बूम को और नीचे की तरफ ले जायँ जबतक की दोनों ही हूक ब्लाक सामने की तरफ न झुक जाय । बूम को फिर नीचे की तरफ करें जबतक कि यह मैच ट्रक के ट्रसल से लगभग 40 से.मी.ऊँचाई तक आ जाय । अब क्रेन को आगे की तरफ चलायें ताकि बूम हेड पिन ट्रसल के बूम रेस्ट के ऊपर आ जाय । अब बूम का नीचे की तरफ करना जारी रखें जबतक की बूम पूरी तरह बूम रेस्ट के अंदर न चला जाय ।

महत्त्वपूर्ण निर्देश

इस समय बूम को बूम रेस्ट में लॉक करना अत्यन्त आवश्यक है ।

(घ) गैलोज को पूरी ऊँचाई तक ऊपर उठायें । "ए" फ्रेम के पिछले भाग के नीचे वाले इकाई को लिंक रोप के द्वारा गैलोज के साथ जोड़ दें । अब "ए" फ्रेम के पिछले दोनों इकाइयों को जोड़ने वाले पिन को निकालकर यथास्थान रख दें । बूम को और नीचे की तरफ करें ताकि डेरिक रस्सों में थोड़ा ढीलापन आ जाय । गैलोज को नीचे की

तरफ करें जिसके परिणाम स्वरूप "ए" फ्रेम का पिछला हिस्सा सीधी लाइन में खड़ा न रहकर, मुड़ जायेगा जिससे इसके दोनों इकाइयों को पूर्णतः मोड़ा जा सके। अब फिर से गैलोज को पूरी ऊँचाई तक ऊपर उठायें। लिंक-रोप को अलग कर लें। अब डेरीक-आउट करना जारी रखें जबतक कि "ए" फ्रेम का अगला हिस्सा उठे हुए गैलोज पर न बैठ जाय। अब एक साथ ही डेरीक आउट और गैलोज को नीचे की ओर करने की क्रिया जारी रखें जबतक कि "ए" फ्रेम के अण्डर-कैरेज में नियत स्थान पर बैठ न जाय। डेरीक आउट कर रस्से को चालक के केबिन पर ढीला कर दें। इस तरह ढीला करना निर्धारित लिमिट स्विच के द्वारा नियंत्रित होना चाहिए। लिमिट स्विच का निर्धारण इस तरह होना चाहिए कि रस्से का ढीलापन ठीक उतना ही हो, जिससे कि क्रेन आपेक्षित रेल की गोलाई को पार कर सके।

(ङ) यह जरूरी है कि क्रेन के रिगिंग और डिरिगिंग करने के समय एक कर्मचारी को क्रेन के ऊपर रखा जाय ताकि वह यह देख सके कि सभी वॉयर-रोप, ड्रम पर ठीक से बैठ रहे हों और ये वॉयर-रोप अपने निर्धारित पथ से अलग होकर कहीं उलझ न जाय।

6.0 लोड के साथ क्रेन का चलना

(क) साधारणतः जब क्रेन को किसी भी लोड को उठाकर चलना पड़े उस समय बूम को रेलपथ के ठीक मध्य में रहना चाहिए। इस स्थिति में क्रेन चलने के अंडर कैरेज में दिये गये व्यवस्था के साथ बाँध देना चाहिए जिससे लोड का दोलन न हो। इसके साथ ही जहाँ तक संभव हो मोड को जमीन से कम ऊँचाई तक रखना चाहिए। क्रेन चलाने के लिए कंट्रोल लीवर को झटके के साथ नहीं चलाना चाहिए। जब ब्रेक लगाने कि जररूत हो, तो कंट्रोल लीवर को न्यूट्रल की अवस्था में धीरे-धीरे लायें और साथ ही पैडल ब्रेक लगाना शुरू करें।

(ख) जिस लोड का आकार मैक्सिमम मोभींग-डाइमेन्सन के सीमा को पार करता हो, उस लोड के साथ क्रेन के चलने के समय अत्यन्त सावधानी रखने की जरूरत है।

(ग) साधारणतः यह प्रश्न पूछा जाता है कि यह 140 टन गॉटवाल्ड क्रेन कितना लोड लेकर चल सकता है। इसका उत्तर जानने के लिए तीनों ही लोड चार्टों को देखें। लोड चार्ट में फ्री-ऑन-रेल की स्थिति मे गये लोड ही वह लोड है जिसे उठाकर क्रेन च है।

7.0 क्रेन को ट्रेन-ऑर्डर की स्थिति में लाना

क्रेन का डिरिगिंग पहले ही बताया जा चुका है। डिरिगिंग करने के बाद यह सुनिश्चित कर लें कि बूम क में लॉक कर दिया गया है, गैलोज और "ए" फ्रेम सुनिश्चित जगह पर नीचे कर दिये गये हैं और आउ बीम को अण्डर कैरेज के साथ लॉक कर दिया गया है क्रेन को इंजन द्वारा खींचने की स्थिति में लाने के लिए नि खत क्रमानुसार निर्देशों का पालन करना जरूरी है।

(क) क्रेन के अण्डर कैरेज में लगे हुए पारकिंग-ब्रे लगायें।

(ख) एक्सियल-ब्लाकिंग को रीलिज करें जबतक कि एक्सियल-ब्लाकिंग सिलिंडर अपने पहले की स्थि न आ जाय। ऐसा करने के साथ ही ट्रैक्सन ट्रैक्सन-पिनियन से अलग हो जायेगा और चाल केबिन में स्थित ब्रेक पैडल प्रभावहीन हो जायेगा गलती से भी यदि यह दब जाय तो भी क्रेन चल समय ब्रेक न लगे।

(ग) अण्डर कैरेज के किनारे दिये हुए हैण्डल को एय भैक्यूम की स्थिति में रखें जैसा कि इंजन का ब्रेक

(घ) मैच ट्रक में भी उसी तरह का ब्रेक सिस्टम होना चा (एयर या भैक्यूम) जैसा कि क्रेन में किया गया है।

(च) क्रेन एवं इंजन के बीच और क्रेन एवं मैच ट्रेक के ब के ब्रेक पाइप को जोड़ दें और जिस पाइप की जरूरत हो, उसे कमी कर दें।

(छ) क्रेन में कार्यरत इंजन को बंद कर दें।

(ज) क्रेन के सारे प्लेटफार्मों को खोल दें और उसे यथास्थ बंद कर दें।

(झ) अब क्रेन के हैण्ड-ब्रेक को खोल दें।

(ञ) अब यह क्रेन इंजन या ट्रेन द्वारा खींचने की स्थिति तैयार है।

प्रस्तुति : राजभाषा विभाग,
रेल इंजन कारखाना, पू० रे० जमालपुर

□ □ □

हिन्दी है भारत की बोली

[illegible] भी हिन्दी के बारे में मैं कुछ सोचना प्रारंभ करता हूँ तो मेरे [illegible] कविवर गोपाल सिंह नेपाली की ये पक्तियां गूंजने लगती [illegible]

"दो वर्तमान को सत्य, सरल, सुन्दर भविष्य के सपने दो,
हिन्दी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो।

[illegible] दो इसे सदा आगे, हिन्दी जनमन की गंगा है।
[illegible] माध्यम उस स्वाधीन देश का, जिसकी ध्वजा तिरंगा है॥
[illegible] पवित्र इसी सुर में, इसमें हर हृदय तड़पने दो।
हिन्दी है भारत की बोली, तो अपने आप पनपने दो॥"

[illegible] तन्नुम और अनुराग के साथ नेपाली जी इस गीत को गाते [illegible] सुनकर रोमांच हो जाता था। जिस किसी ने भी नेपाली जी [illegible] इस गीत को सुना होगा, वह इसे भूल नहीं सकता।

[illegible] से 7-8 सौ वर्ष पहले अमीर खुसरो ने "तोतए-हिन्द" [illegible] हिन्दी में जो मुकरियां, दोहे, गजलें और नगमे लिखे थे, [illegible] पढ़ता हूं तो मन नहीं भरता है—

[illegible] समय वह मेरे आवे। भोर भये वह घर उठि जावे॥
[illegible] अचरज है सबसे न्यारा। हे सखि साजन ? ना सखि तारा॥
[illegible] पांव किरन नहि देत। पांव से मिट्टी लगन नहि देत॥
[illegible] का चूना लेत निपूता। हे सखि साजन ? ना सखि जूता॥

[illegible] भांति अमीर खुसरो का यह पद्य—

[illegible] सोवे सेज पर, मुख पर डाले केस।
[illegible] खुसरो घर आपने, रैन भई चहुंदेस॥

[illegible] सोचता रहता हूं कि जिस हिन्दी को सरहपा से लेकर गोरखनाथ [illegible], चन्दबरदाई से लेकर विद्यापति ने चमकाया, कबीर से [illegible] ने भक्ति की धारा बहाई, जायसी से लेकर तुलसीदास ने [illegible] के गले का हार बनाया, रसखान से लेकर बिहारी तक ने [illegible] से सजाया, गुरु अर्जुन देव से लेकर गुरु गोविन्द सिंह [illegible] ने जिसे अपना माध्यम बनाया, देव से लेकर पद्माकर तक ने [illegible] से मढ़ दिया और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से लेकर [illegible] प्रसाद तक ने इसे समृद्धि के जिस शिखर पर पहुंचाया [illegible] लेखा-जोखा इतिहास करेगा, हम क्या करें।

[illegible] शताब्दी से लेकर आज तक हिन्दी की गाड़ी अनवरत [illegible] की आशा-आकांक्षा को अपने साथ लेकर बढ़ रही है, [illegible] राष्ट्रभाषा कहिए, राजभाषा कहिए, संपर्क भाषा कहिए या [illegible] कहिए कोई फर्क नहीं पड़ता। कहा गया है "घी का लड्डू [illegible] भला" इस मुहावरे के अनुसार हिन्दी भारत मां के ललाट की [illegible] है, हिन्दी चंदन लेप है और हिन्दी धूप-दीप अगरू, अक्षत तथा [illegible] के समान पवित्र सनभाव है।

संभव है कि लोग कहें कि हिन्दी वाले ही हिन्दी का बखान करते हैं। तो आइए, समय-संदर्भ को हम इन विन्दुओं के द्वारा देखें-परखें। उन महापुरुषों की शरण में चले जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी, लेकिन जिन्होंने महसूस किया कि हिन्दी के बिना राष्ट्र की अस्मिता, एकता खतरे में पड़ जाएगी।

गुन्नार मीर्डल का कहना था – " जब तक भारतीय संसद के वाद-विवाद अंग्रेजी में चलते रहेंगे, देश की राजनीति का जनता से कोई सरोकार नहीं होगा और वह एक छोटे से वर्ग की बपौती बनकर रह जाएगी।"

पोलैंड निवासी प्रो० मारिया स्टोफा ब्रिस्की ने उचित ही कहा है कि " भाषा और भाव का संबंध एक अति महत्त्वपूर्ण समस्या है। जो भाषा भाव को सीधे हमारे मन की गहराइयों तक नहीं पहुंचा पाती है, उस भाषा के माध्यम से हम कभी अपनी अंतरात्मा को व्यक्त नहीं कर पाएंगे, चाहे इसके कितनी भी अलग-अलग व्यक्तिगत अपवाद क्यों न हों। भाषा के माध्यम से एक समस्त संस्कृति व समाज दृष्टिगोचर होता है। अंग्रेजी भाषा के सहारे हम विदेशी लोग न भारतीय समाज को ठीक से जान सकते हैं, न उसकी संस्कृति। भारत की आत्मा को पहचानने के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है।"

इसी भांति जर्मनी के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० लोथार लुत्से का कहना है कि — "हिन्दी मध्य-देश की भाषा के रूप में दुनिया की सेवा कर सकती है, किन्तु हिन्दी के साथ अंग्रेजी नहीं चल सकती। हिन्दी और तमिल, हिन्दी और तेलुगू, हिन्दी और बंगला आदि साथ-साथ चल सकती है, किन्तु हिन्दी और अंग्रेजी से मामला गड़बड़ होने लगता है जब हम विश्व हिन्दी का समर्थन करते हैं मगर यह भी कामना करते हैं कि हिन्दी वाले भी हिन्दी को अपनाएं।"

मैं अपनी बात यहां कम से कम इसलिए कहना चाहता हूं कि संभव है उसमें कुछ आग्रह, दुराग्रह एवं अपनी मनःस्थितियों की झलक दिखाई दे, अतः मैं इससे बचते हुए या अपने को बचाते हुए कुछ ऐसे अहिन्दी भाषियों के मंतव्यों को आप तक पहुंचाना चाहता हूं जो प्रेरणा और प्रण का काम कर सके। ऐसे ही कतिपय वरेण्य विभूतियों के वाक्यांश यहां प्रस्तुत हैं, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थीं—

"हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में जो लोक एक्य-बंध स्थापित कर सकेंगे वे ही प्रकृत भारत-बंधु कहलाने योग्य होंगे। अतः हमें हिन्दी भाषा में पुस्तकें लिख कर और वक्तृता द्वारा भारत के अधिकांश स्थानों का मंगल-साधन करना चाहिए।"

—बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

हिन्दी तो राष्ट्रभाषा है ही, भले ही कुछ नेता वैसा न मानें, सैकड़ों वर्ष पूर्व हमारे संतों, व्यापारियों एवं धार्मिक यात्रियों द्वारा हिन्दी का यह रूप स्वीकार किया जा चुका है। उस लोक स्वीकृत भाषा को

अपनाकर ही हम भारत की एकता को दृढ़ कर सकते हैं। सभी प्रांतीय भाषाओं द्वारा देवनागरी लिपि स्वीकार किए जाने पर निश्चय ही काफी अंश तक विविधता में एकता आ सकेगी। एक दूसरे की भाषाएं सीखने और लिखने, पढ़ने में लोगों की रुचि बढ़ेगी। हमें अपनी क्षेत्रीय संस्कृति के प्रति स्वाभिमान अवश्य होना चाहिए। किन्तु विराट् भारत की सांस्कृतिक एकता जो अत्यंत प्राचीन काल से अखंड चली आ रही है जो बहुत बड़ी चीज है, उसे हम भुला नहीं सकते।"

—मामा वरेरकर

"हिन्दी समग्र भू-मंडल की तीसरी भाषा है, विश्व की मानव संतान के पंचमांश की होनहार राष्ट्रभाषा है। हिन्दी की अभिव्यंजना-शक्ति अपूर्व है।" —डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

"यदि हम प्रजातंत्र को उसके वास्तविक रूप में देखने की अभिलाषा रखते हैं तो व्यापक नियंत्रण को वास्तविक बनाने के लिए राज्य की एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जो जनता के बहुत बड़े भाग द्वारा बोली तथा समझी जाती हो। केन्द्रीय सरकार तथा कानून की भाषा और प्रांतीय सरकारों के परस्पर तथा भारत सरकार के साथ व्यवहार की भाषा हिन्दी अवश्य ही होगी, शिक्षा के मामले में यदि हमें शक्ति के अपव्यय को रोकना है और संपूर्ण पीढ़ी को दंडित होने से बचाना है तो हमें कुछ ही वर्षों में वस्तुस्थिति का पूर्व ज्ञान कर लेना चाहिए। अतः वर्तमान पीढ़ी के लड़कों को हिन्दी तुरंत ग्रहण कर लेनी चाहिए। चाहे वह उनके विद्यालय के पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हो अथवा न हो।

भारत राष्ट्र की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो चुकी है, लोगों ने हिन्दी को अपनी राष्ट्रभाषा माना है। यदि किसी की ओर से देरी हो रही है तो वह सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों की ओर से हो रही है।

विधान के स्वीकृत करने पर भी कर्मचारी अंग्रेजी में उत्तर देते हैं। यह निषेधनीय है। इसका स्पष्ट निषेध होना चाहिए।"

– श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

"यदि अंग्रेजी को अनिश्चित काल के लिए सखी भाषा के रूप में रखा जाए तो ऐसा दिखाई देता है कि वह सखी नहीं, साम्राज्ञी भाषा बनी रहेगी। जिस भाषा को एक प्रतिशत लोग बोलते हैं, वह शेष निन्यानबे प्रतिशत पर लादी जा रही है, इस बात को कोई भी स्वाभिमानी भारतीय बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

– न० वि० गाडगिल

"विद्या की कोई भी संस्था वास्तविक अर्थ में भारतीय नहीं कही जा सकती जब तक कि उसमें हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन का प्रबंध नहीं है।

हिन्दी ही हमारे राष्ट्रीय एकीकरण का सबसे शक्तिशाली और प्रधान माध्यम है। यह किसी प्रदेश या क्षेत्र की भाषा नहीं है, बल्कि समस्त भारत की भारती के रूप में ग्रहण की जानी चाहिए।

हमें यह भी सोचना चाहिए कि हम हिन्दी को केवल व्यवहार मात्र या शासन की भाषा बनाना चाहते हैं। हमको तो जैसी इंगलैंड की अंग्रेजी भाषा और फ्रांस भाषा है, उसी तरह की भारत की भारती हिन्दी को बनाना है।" —कन्हैयालाल मणिकलाल मुं

इसके साथ यह भी जरूरी समझता हूं कि कुछ महान नेताओं उद्गारों को भी आपके सामने रखूं। बापू का यह सुप्रसि कथन-स्मरणीय है– "अगर मेरे हाथ में तानाशाही सत्ता हो तो आज से ही विदेशी माध्यम के जरिए दी जाने वाली हमारे लड़ और लड़कियों की शिक्षा बंद कर दूं और सारे शिक्षकों अ प्रोफेसरों से यह माध्यम तुरंत बदलवा दूं या उन्हें बर्खास्त करा दूं। पाठ्यपुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूंगा, वे तो माध्यम परिवर्तन के पीछे-पीछे अपने आप चली आएंगी। यह एक ऐ बुराई है, जिसका तुरंत इलाज होना चाहिए।"

राष्ट्रभाषा के अनन्य प्रहरी बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन राष्ट्रभाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा था— "राष्ट्रभाषा नींव वह हिन्दी है जिसकी प्राचीन काल से होते हुए चंद, सूर, तुल कबीर, रसखान, रहीम, जायसी, हरिश्चंद, बालकृष्ण भट्ट अ महावीर प्रसाद द्विवेदी के हाथों हमें मिली है और जो मुख्य रूप उत्तर भारत के प्रदेशों में लिखी-पढ़ी जाती है।

किन्तु उस राष्ट्रभाषा का स्वरूप भिन्न-भिन्न प्रांतों में कुछ भिन्न रखेगा। जिस प्रकार हिन्दी भाषा पर बहुत काल से अरबी अ फारसी का असर पड़ा है, उसी प्रकार जैसे-जैसे अंतर प्रांत व्यवहारों में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ेगा वैसे-वैसे उस भाषा विकास में प्रांतीय भाषाओं का असर पड़ना अनिवार्य है।

साहित्य और राष्ट्रीयता दोनों की दृष्टि से यह आदान-प्र हिन्दी को समृद्धिशाली बनाएगा।"

सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता डा० राममनोहर लोहिया का हि प्रेम सर्वविदित है। अंग्रेजी को उन्होंने गुलामी का प्रतीक माना थ उनका कहना था — "मेरी समझ में वे लोग बेवकूफ हैं जो समझते कि अंग्रेजी के रहते हुए भी जनतंत्र आ सकता है। हम तो समझते कि अंग्रेजी के होते यहां ईमानदारी आना भी असंभव है।

थोड़े से लोग इस अंग्रेजी के जादू द्वारा करोड़ों को धोखा रहेंगे।"

प्रायः लोग प्रथम प्रधानमंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू को अंग्रे के प्रबल समर्थक के रूप में व्यक्त करते हैं, जब कि सच्चाई यह है नेहरू जी इसे विवाद का विषय नहीं बनाना चाहते थे। उन्होंने स कहा था — " मैं विचार का विरोधी हूँ कि अंग्रेजी भारत राजभाषा बनाई जाए। इसका विरोध मैं इसलिए नहीं करता हूं कि कोई संकीर्ण राष्ट्रवादी विचार वाला व्यक्ति हूं, बल्कि इसलिए विरो हूं कि अंग्रेजी के कारण अंग्रेजी जानने वाले लोगों और जनता दुराव पैदा होता है, एक बड़ी खाई- सी बन जाती है।

हम जितनी जल्दी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को बिठा दें उ ही अच्छा है। उसमें देर लगने से देश में और विदेशों में ह बदनामी होती है।"

भारत की पूर्व प्रधानमंत्री स्व० श्रीमती इंदिरा गांधी भी हिन्दी की शक्ति को भलीभांति जानती थीं, इसीलिए उन्होंने 1976 में उनके लिए एक अलग राजभाषा विभाग की स्थापना करवाई। उनके प्रधान मंत्रित्व काल में हिन्दी का विकास सरकारी और गैर सरकारी स्तरों से प्रशंसापूर्वक हुआ।

संविधान सभा में जिस समय हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया था, उस समय पीठासीन अध्यक्ष की कुर्सी पर हमारे पूर्व राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद विराजमान थे। उन्होंने उस समय अपने आपको किसी बहस में नहीं डाला, लेकिन राष्ट्रपति होने के बाद उन्होंने साफ कहा—"आज हिन्दी के आलोचकों का कहना है कि हिन्दी में राजभाषा बनने के लिए आवश्यक क्षमता या शब्दावली नहीं है, और अत्यंत सक्षम अंग्रेजी को हटाकर ऐसी कच्ची भाषा को भारत की राजभाषा बना दें तो देश के शासनतंत्र में अवांछनीय शिथिलता आ जाएगी, जिसके कारण देश की शांति और सुरक्षा भी खतरे में पड़ जाएगी। इन आलोचकों का विरोध राजभाषा हिन्दी की क्षमता या सम्पन्नता पर नहीं, बल्कि राजनैतिक राग-द्वेष पर ही मुख्यतः आधारित है। सतत प्रयोग और शाश्वत सुधार से ही कोई भी भाषा मंजकर, गठकर सक्षम और सशक्त माध्यम बनती है। इसके लिए आवश्यक अवसर हम अपनी प्रादेशिक भाषा और हिन्दी को भी दें, तो वे भी अंग्रेजी की तरह सक्षम और सशक्त अवश्य बन जाएंगी।"

इन संदर्भों के माध्यम से मैं चाहूंगा कि आप स्वयं निष्कर्ष निकालें कि राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा जनभाषा के रूप में हिन्दी का महत्त्व क्या है तथा उसका स्वरूप क्या हो ?

[साभार : राजभाषा भारती, अंक – 63]

□ **स्व० शंकर दयाल सिंह**

सम्मति

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि रेल इंजन कारखाना, जमालपुर का 'राजभाषा-विभाग'— हिन्दी पत्रिका "कर्मवीर" अंक 16 वाँ प्रकाशित कर रहा है।

मुझे खुशी है कि रेल प्रशासन की ओर से कर्मचारियों एवं पदाधिकारियों को इस पत्रिका की ओर से संगृहीत अच्छे-अच्छे लेख, कविता एवं कहानी बहुत लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं।

(1) जमालपुर रेल कारखानाा : कल, आज और कल

(2) ट्रेन कैसे चलती है ?

(3) इन्हें जानिए — जैसी रचनाओं से राजभाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। यह गागर में सागर भरने जैसा है।

नूतन वर्ष का हर दिन !
नूतन लगता है !!
हर दिन का हर क्षण !
नूतन लगता है !!

मेरी शुभकामनाएँ हैं, कर्मवीर परिवार का
खिला गुलाब सा सबको
सुगन्ध आता रहे।

उपेन्द्र प्रसाद सिंह "शास्त्री"
मंत्री
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्
ओपेन-लाइन पू० रे० जमालपुर शाखा
662- ए० बी०, दौलतपुर कॉलोनी
पूर्व रेलवे, जमालपुर (मुंगेर) 811201

राजभाषा-हिंदी और भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अंक

भाषा भावाभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। अतः सरकार और जनता के बीच महत्त्वपूर्ण कड़ी भी है। सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को जनता तक पहुँचाने का भाषा ही एक सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। आज के इस प्रजातांत्रिक युग में तो भाषा का महत्व और भी बढ़ गया है। अतः साधारण जनता और प्रशासन के कार्य के प्रति आस्था जागृत करने के लिए आवश्यक है कि प्रशासन का सारा काम एक ऐसी भाषा में हो जो जनता की भाषा हो। हमारा देश एक बड़ा देश है जिसमें अनेक भाषाओं, जातियों एवं वेशभूषाओं का समावेश है। बोलचाल की अनेक भाषाओं के बावजूद संविधान में 18 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। परन्तु राजकाज चलाने तथा केन्द्र एवं राज्यों के बीच संपर्क स्थापित करने का उत्तरदायित्व हिन्दी को सौंपा गया है, क्योंकि यह देश के एक बहुत बड़े क्षेत्र में प्रयुक्त होती है। भारतीय संविधान के भाग– 17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक हिन्दी विषयक विविध अनुच्छेदों का समावेश किया गया है। हमारे संविधान का अनुच्छेद 343 (I) सीधे सरल शब्दों में यह घोषणा करता है कि ''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के प्रयोजन के लिए प्रयोग होने वाले अंक का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।''

भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय रूप के बारे में लोगों में बड़ा भ्रम है। आज संसार के अनेक देशों में जिन अंक संकेतों का प्रयोग होता है, वे ये हैं– 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 कई लोग इन्हें भ्रमवश 'अंग्रेजी अंक' कहते हैं। वास्तव में 'अंग्रेजी अंक' या 'अंग्रेजी लिपि' नाम की कोई चीज नहीं है। जिस लिपि में अंग्रेजी भाषा लिखी जाती है, वह रोमन लिपि है और रोमन अंक पद्धति के सात मूल अंक समेत हैं–

I	V	X	L	C	D	M
1	5	10	50	100	500	10000

इनमें प्रारम्भ के तीन अंक संकेतों से 1 से 1[illegible] तक की संख्याएँ लिखी जाती हैं, जैसे :

I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X
1	2	3	4	5	6	7	8	9	1[illegible]

रोमन लिपि में '0' (शून्य) नहीं है। शून्य त[illegible] भारतीय मनीषी की एक बहुत महत्त्वपूर्ण खोज है। वेद[illegible] में 'शून्य' शब्द नहीं है। कालान्तर में जब यह शब्[illegible] मिलता है तो इसका अर्थ है– 'रिक्त' या 'खाली स्थान' [illegible] अमरकोश में शून्य का यही अर्थ है। आचार्य पिंगल [illegible] 'छन्दसूत्र' नामक ग्रंथ के आठवें अध्याय में 'शून्य' शब्[illegible] का मात्राओं की गणना के संदर्भ में प्रयोग किया है[illegible] प्रख्यात ज्योतिषी वराहमिहिर ने सन् 505 ई० में अप[illegible] ग्रंथ 'पंचसिद्धान्तिका' में शून्य के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह अंक पद्धति वास्तव में, भारतीय देन है।

यूरोप की भाषाओं में 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 जैसे जिन अंक संकेतों का प्रयोग होता है, उन्हें यूरोप के लोग सामान्यतया 'अरबी-अंक' कहते हैं। कभी-कभी इन्हें 'इण्डो-अरैबिक' अंक भी कहते हैं। परन्तु इतना अवश्य है कि ये अरबी अंक संकेत नहीं हैं क्योंकि अरबी अंक-संकेत दूसरे हैं। प्राचीन अरब गणितज्ञों ने इन अंक संकेतों को 'हिन्दिसा' अल-अरकम्-अल-हिन्द (हिन्द के अंक) या 'गुबार-अंक' कहा है। अतः निश्चय ही ये भारतीय अंक संकेत है[illegible]

आज संसार के अनेक देशों में जि[illegible] अंक-संकेतों– 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 क[illegible] प्रयोग होता है, वे भारतीय उत्पत्ति के अंक-संकेत हैं[illegible] ये अंक चिह्न भारत के हैं। इन अंक-चिह्नों का मू[illegible] भारत के प्राचीन ब्राह्मी अंक संकेतों में है। इन अन्तर्राष्ट्री[illegible] अंक-संकेतों का धीरे-धीरे विकास हुआ है। जिस प्रका[illegible] हमारे आज के देवनागरी अंक संकेतों का विका[illegible]

पुरानी ब्राह्मी अंक संकेतों से हुआ है, उसी प्रकार 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 अंक संकेतों का विकास भी पुरानी ब्राह्मी अंक संकेतों से ही हुआ है।

भारतीय अंक पद्धति के साथ पहले से अंक-संकेत पश्चिमी एशिया के देशों में पहुँचे। अरबों ने इन्हीं अंक-संकेतों को 'हिन्दिसा' या 'गुबार अंक' कहा है। भारतीय अंक पद्धति संसार की किसी भी अन्य पद्धति से श्रेष्ठ थी और इससे गणित की क्रियाओं में आसानी होती थी। इसलिए अरबों ने इसे अपनाया और इसकी प्रशंसा की। इब्न बहशिया (855 ई०) को तीन प्रकार के भारतीय अंक संकेतों की जानकारी थी। अरबी निबन्धकार जाहिज (9 वीं सदी) ने भारतीय अंकों को 'हिन्द के स्वरूप' कहा है। अधिकांश अरबी विद्वानों ने इन अंक संकेतों का 'हिन्दिसा' (हिन्द के अंक) कहा है।

प्रसिद्ध विद्वान अलबेरुनी (सन् 973-1049 ई०) ने भी भारतीय अंकों के बारे में जानकारी दी है। अपने भारत संबंधी ग्रंथ 'किताब अल हिन्द' में उन्होंने लिखा है- "जिस प्रकार हम अंकों के लिए अरबी अक्षरों का प्रयोग करते हैं, उसी प्रकार भारत के लोग अपनी वर्णमाला का अंकों के लिए प्रयोग नहीं करते। भारत के विभिन्न भागों में जिस प्रकार वर्णमाला के अक्षरों के आकार भिन्न-भिन्न हैं, उसी प्रकार उनके अंक-संकेतों के आकार भी भिन्न-भिन्न हैं। हम जिन अंक-संकेतों का प्रयोग करते हैं, वे भारत के सर्वोत्तम अंक-संकेतों से व्युत्पन्न है।"

पश्चिमी एशिया के देशों से ये अंक संकेत यूरोप पहुँचे। यूरोप के देशों ने जब भारतीय अंक पद्धति को अपनाया तो साथ में इन अंक चिह्नों को भी अपना लिया। ये अंक संकेत उन्हें अरबों से मिले, इसलिए वे अब भी इन्हें 'अरबी अंक' कहते हैं। जबकि वास्तव में ये भारतीय अंक हैं। यूरोप के सभी देशों में इन्हीं अंक संकेतों का प्रयोग होता है। यूरोप के साम्राज्यवादी देशों ने अमरीका, अफ्रीका, एशिया तथा आस्ट्रेलिया में अपने उपनिवेश स्थापित किए तो ये अंक संकेत भी उन देशों में पहुँचे। अंग्रेजों के साथ ये अंक संकेत भारत पहुँचे। इन अंक संकेतों को अंग्रेजी भाषा की लिपि के साथ प्रयुक्त होते देखकर भारतवासियों ने इन्हें अंग्रेजी अंक-संकेत समझा जबकि ये भारतीय अंक संकेत ही है।

आज विश्व के अधिकतर देशों में इन्हीं अंक संकेतों का प्रयोग होता है। हमारे देश के शासन ने भी अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त इन अंक संकेतों को सम्पूर्ण भारत के लिए पुनः अपना लिया है। इसीलिए हम इन्हें 'भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप कहते हैं। भारत सरकार के सभी केन्द्रीय कार्यालयों में इन अंकों का प्रयोग अनिवार्य है। अब हिन्दी के नए प्रकाशनों में भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग प्रारम्भ हो गया है। बंगला, उड़िया, असमिया, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि भाषाओं के प्रकाशनों में भी इन्हीं अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का प्रयोग होना चाहिए। जब सारे देश के प्रकाशनों में इन अन्तर्राष्ट्रीय अंकों को अपना लिया जाएगा तो हम बड़े गर्व से कह सकेंगे कि ये अंक-संकेत मूलतः भारतीय हैं।

[साभार – राजभाषा भारती, अंक – 56]

❑ **डॉ० रमेश चन्द्र शुक्ल**

शब्द भंडार बढ़ाइए

ADVISORY COUNCIL	— मंत्रणा-परिषद्	BRAIN DRAIN	— प्रतिभा पलायन
TRANSMITTING STATION	— प्रेषण-केन्द्र	BUREAUCRACY	— नौकरशाही
VIROLOGIST	— वायरस-विज्ञानी	DUALISM	— द्वैतवाद
ADJOURNMENT MOTION	— स्थगन प्रस्ताव	FISCAL POLICY	— राजस्व नीति
ARMS BUILD UP	— शस्त्र संग्रह	BALANCED BUDGET	— संतुलित बजट

कुमार विजय गुप्त की चार कविताएँ :-

खिड़कियाँ

घर की दीवारों से
जड़ी रहती हैं खिड़कियां
चेहरे पे आँखों की तरह.

खुलती हैं खिड़कियां
तो भीतर तक आ जाता है उजाले का कारवां
बेधड़क घुस आता है सारा का सारा मौसम
बड़ी ही मासूमियत से
चली आती है कोई नन्ही चिड़ियां
जीवन्त हो उठता है घर.

खिड़कियों के रस्ते
अखबारवाला लड़का डाल जाता है अखबार
डाकिया गिरा जाता है कुछ जाने–अनजाने लिफाफे
तुड़ा-मुड़ा प्रेम-पत्र भी फेंक जाता है कोई
कभी भी, किसी वक्त !

पड़ोसियों के दुख-दर्द की
पूछताछ कर सकते हैं हम
और बन सकते हैं प्रत्यक्ष गवाह
घर के बाहर हुई वारदातों का.

दरअसल खिड़कियों के माध्यम
पूरी तरह जुड़े होते हैं हम
दुनियाभर की तमाम संवेदनाओं से.

इसीलिए अमन–चैन के शत्रुओं को
जरा भी पसंद नहीं होता
खिड़कियों का खुला होना

कभी खिड़कियों से चुरा ले जाते हैं
हमारे पसंदीदा कपड़े
छोटी-मोटी जरूरत की चीजें
तरह-तरह की जुगत लगाकर
तो कभी वीभत्स धमाके के साथ
बंदकर जाना चाहते हैं
सारी की सारी खिड़कियों की खुली पलकें.

बावजूद इसके
सदियों से खुली छोड़ी जाती रही हैं खिड़कियां
खिड़कियों पर ही इतंजार करती हैं औरतें
पति के घर लौट आने का
और किसी शरारती गेंद की तरह
खिड़कियों से कूदकर कमरे में चला आता है
पूरा का पूरा चांद !

गैस-चूल्हा

किसी संघर्षपूर्ण मैच में जीते गये
शानदार ट्रॉफी की तरह
घर लाया गया ..... गैस–चूल्हा

गुम हो चुकी थी इसकी चमक-दमक में
हमसबों की कई तेज मद्धिम आकांक्षा किरणें !

आज सुबह-सुबह
राम-सलाम कर दिया गया
कोयले फोड़ने वाले हथौड़े को
खाली-सा मुंह लेकर लौट गई दरवाजे पर से
गोयठेवाली की जानी-पहचानी हांक

मुक्त हो गया छोटा भाई
जैसा-तैसा कोयला उठा लाने के लांछण से !

कोयले को फोड़ने के क्रम में अब
असावधानी की सजा नहीं झेलेंगीं बहन की उंगलियां
सजा पायेंगी अपने माथे पर
मनमोहक नाखूनों के मुकुट !

न कांय–कांय, न चांय–चांय
गोकि पाइप के सहारे गैस-चूल्हा
सांय–सांय खींचेगा सिलिण्डर में से गैस
नीली लौ के साथ लहकेगा फांय–फांय
और धांय–धांय फूलेंगे
रोटियों के गोल-मटोल पेट !

अब धुंधली नहीं पड़ेगी दीवारों की सतह
जहां-तहां लटककर परेशान नहीं करेंगे झोल !

ताव को ऊपर तक आने की जद्दोजहद में
नहीं टीसेगी पत्नी की खूबसूरत आंखें
नहीं घुलेगा धुएँदार-स्वाद
मेरी कड़कदार चाय में.

गोयठे कोयले वाला चूल्हा
जो अबतक बना रहा रसोईघर का शंहशाह
आज से ही ले लिया संन्यास
और मां ने रोली-चंदन, प्रसाद–पूजन के पश्चात्
सत्तासीन कर दिया रसोईघर के रैक पे
चमचमाते हुए गैस-चूल्हे को !

कल शहर बंद रहेगा !

न जुबान खुलेगी
न हाथ-पांव हिलेंगे
बिन पहियेवाली कुर्सी पर बैठे
किसी विकलांग की तरह
सिर्फ टुकुर–टुकुर तकेगा
कल शहर बंद रहेगा !

जिन्हें खेलने हों गिल्ली.डंडे
आज ही जी भरके खेल लें
जिन्हें करनी हो दूर-दराज की यात्राएं
आज ही पूरी कर लें
जिन्हें जनने हों बच्चे
आज ही जन लें
कल की गारंटी कोई नहीं लेगा
कल शहर बंद रहेगा !

चौराहे पे उलट दिया जाएगा
मरियल-सा रिक्शा
खदेड़ दी जाएंगी टीन-कनस्तर पीट-पीटकर
ट्यूशन पढ़ने जा रही लड़कियां
पिट जाएगा आरजू-विनती करता
कोई बेहद बीमार मरीज
टोकरी में सब्जी बेचने के जुर्म में लुटा
कोई लड़का सिसकेगा
कल शहर बंद रहेगा !

गर्म रहेगा अफवाहों का बाजार
लहरायेंगे रंग-बिरंगे झंडे व बैनर
जुलूस निकलेंगे, पत्थरबाजी होगी
बंद, गैर-सरकारी है
तो चुस्त दिखेगा प्रशासन
सरकारी है, तो लुंजपुंज होगा सबकुछ
उन्हीं की डफली होगी
उन्हीं का राग अलपेगा
कल शहर बंद रहेगा !

कल कसाई के हाथों बिकी
छोटी–छोटी रस्सियों से बंधी
खस्सियों-सी असहाय दिखेगी जनता
जनतांत्रिक मूल्यों वाला यह शहर
कसाईखाना बनेगा
कल शहर बंद रहेगा !

हम आयेंगे इस वर्ष भी !

बीते वर्ष की तरह इस वर्ष भी
बड़े ही विश्वास के साथ तुम बिछाओगे शब्द.जाल
मौसम व जीभ की लार के हिसाब से
बिखेरकर वायदों के लुभावने दानें
छिपकर करोगे इंतजार हमारे फंस जाने का,
हम आयेंगे इस वर्ष भी
परन्तु रट्टू तोते की तरह जाल पर बैठेंगे नहीं
बल्कि ढूंढ़.निकालकर करेंगे तुम्हें बेनकाब !

बीते वर्ष की तरह इस वर्ष भी
टेबोगे तुम भीड़.भड़क्केदार जगह
डमरू डमडमाकर जमाओगे मजमा
सांप.बिज्जी का खेल दिखाओगे
फिर बेचने निकालोगे सर्पदंश.काट की ताबीज,
हम आयेंगे इस वर्ष भी
परन्तु अपने साथ लेकर कुछ विषैले सांप
कहेंगे तुम्हें अपने पर ही जाँचने ताबीज !

बीते वर्ष की तरह इस वर्ष भी
तुम सजाओगे हमारे खिलाफ चक्रव्यूह
इसके दरवाजों पर खड़े करोगे
दुर्योधन ..... जयद्रथ .... शकुनि जैसे विवाद
खौफनाक खूनी इरादे लिए ठोकोगे ताल;
हम आयेंगे इस वर्ष भी
परन्तु गर्भ में रह जगाये रखकर माँ को
पिता से चक्रव्यूह भेदने के सारे गुर सीखने के बाद !

कार्मिक शाखा
पू० रे०/जमालपुर

सुनहरा साल

आया है सुनहरा साल मेरा घर-घर में दीप जलायेंगे।
हम अपनी आजादी की खुशियाँ मिलकर खूब मनायेंगे।
हर आन यहाँ खुशहाली है हर घर में मनी दिवाली है।
बागों में महकती खुशबू है चारों ओर यहाँ हरियाली है।
हर जुबाँ पे वतन का नगमा है हर महफिल में कौव्वाली है।
सूरज दामन फैलाता है यहाँ खुशियाँ बढ़ने वाली है।
हिंदी-हिंदी, भाई-भाई गले से गला मिलायेंगे।
हम अपनी आजादी की खुशियाँ मिलकर खूब मनायेंगे।
आया है सुनहरा .....

बुलबुल के तराने गूँजते हैं आजादी के गुलजारों में।
हर सिक्त बहारें आई हैं रोहराओं में कोहसारों में।
कलियों से हुस्न टपकता है और रानाई खारों में।
कुदरत के नजारे बिखरे हैं धरती-चाँद-सितारों में।
सोनी धरती अल्ला रखें हम अमन के गीत सुनायेंगे।
हम अपनी आजादी की खुशियाँ मिलकर खूब मनायेंगे।
आया है सुनहरा .....

पैगामे हक सुनाया चिश्ती ने इस चमन में।
वहदत का गीत गाया नानक इस अनजुमन में।
दी अमन को सदायें गांधी ने इस वतन में।
खुशियाँ मनाये हम सब भारत के पैरहन में।
भारतवासी दुनिया को पैगामें अमन सुनायेंगे।
हम अपनी आजादी की खुशियाँ मिलकर खूब मनायेंगे।
आया है सुनहरा .....

ये मेरा बागे एरम है किश्वरे हिन्दुस्तां।
रंगीन इसको करवाया मेरे लहू को दास्तां।
गुलशने हिन्दुस्तां में हैं शहीदों के निशां।
इसकी हुरमत की तहपमज का वकील है पासवां।
कहकशाँ पर यह तिरंगा उम्र भर लहरायेंगे।
हम अपनी आजादी की खुशियाँ मिलकर खूब मनायेंगे।
आया है सुनहरा .....

❑ **मुहम्मद वकील अंसारी**
सहायक अवर निरीक्षक,
रेलवे सुरक्षा बल,
पूर्व रेलवे जमालपुर

फिर बहाना किसलिए

पहले भी मैं गजल लिखता था,
मालूम न था किसलिए ?
अब आप मिल गई हैं
तो फिर बहाना किसलिए ?

पहले भी दिल धड़कता थ
मालूम न था किसलिए
अब आपसे आँखें लड़ ग
तो फिर बहाना किसलिए ?

पहले भी चाँदनी छिटकती थी,
मालूम न था किसलिए ?
अब ओठों पे मुस्कान तैर गई
तो फिर बहाना किसलिए ?

पहले भी कोयल कूकती थी
मालूम न था किसलिए ?
अब आपकी आवाज सुनी
तो फिर बहाना किसलिए ?

मैं इश्क को राज मानता था,
मालूम न था किसलिए ?
अब मुहब्बत का सरताज हूँ
तो फिर बहाना किसलिए ?

❑ **ओम प्रकाश वर्णवाल**
राजभाषा सहायक
प्रधान कार्यालय
पूर्व रेलवे, कलकत्ता

'उन्हें अपना देश याद आया'

जब आकाशवाणी ने राष्ट्र भक्ति की धुन सुनाई
दूरदर्शन पर तिरंगे की चित्र उभर कर आई।
जब बच्चों ने तिरंगा फहराया, तो समझ आया,
उन्हें अपना देश याद आया।

सोये थे बेखबर, जब जंगे आजादी की थी।
बैठे थे घरों में, जब देश में बरबादी थी।
आज पहने जब खादी तो समझ आया,
उन्हें अपना देश याद आया।

फैलाते जातिवाद को, लड़ते सत्ता की लड़ाई,
लूटते देश को, बढ़ाते आतंक और मंहगाई।
जब बीते पाँच साल तो समझ में आया,
उन्हें अपना देश याद आया।

जहाँ खुशियाँ थी कल, आज मातम है वहाँ।
समस्यायें अनेक हैं, पर उन्हें यह खबर कहाँ।
जब समय मतों का आया, तो समझ आया,
उन्हें अपना देश याद आया।

❑ **राजकुमार**
कनिष्ठ लेखा सहायक
श्रम अनुभाग
लेखा कार्यालय
पूर्व रेलवे, जमालपुर

एक पाती

है जरूरत आज सारे
विश्व को प्रेम की
सद्भावना और विश्वास की
आज लिख दो–
विश्व के नाम, तुम
एक पाती प्रेम की
विश्वास की।

विश्वास जो करने चला तो
हृदय छलनी हो गया–
प्रेम जो करने चला तो
हृदय जख्मी हो गया
सद्भावना जो पा सका
तो धन्य अपने को समझ–
नफरतों की भावना से
विश्व जख्मी कर गया–

एक धोखा जब से मिला
विश्वास जग से उठ गया
सद्भावना के भाव
मन से धीरे-धीरे घट गया
जब भी लुटते-लुटाते देखता है
आदमी को आदमी
स्वीकारता सब मौन बनकर
है नियति यही, पर बस नहीं।
जोड़ना होगा उन टुकड़ों को
दर्पण के, जो किसी के हाथ गिर गया
गिर कर टूटा, टूटकर बिखर गया।
है जरूरत आज सारे
विश्व को प्रेम की
सद्भावना और विश्वास की
आज लिख दो–
विश्व के नाम, तुम
एक पाती प्रेम की
विश्वास की।

❑ **श्रीमती आभा प्रदीप कुमार**
द्वारा - निदेशक, इरमी,
पूर्व रेलवे, जमालपुर

गज़ल

कुछ उनकी निगाहों ने लूटा, कुछ उनकी नजाकत मार गई।
इजहारे मुहब्बत कर न सका, शरमाने की आदत मार गई।।

मालूम न था उल्फत में तेरी, जीना भी पड़ेगा मर-मर के।
अब तुमसे मुहब्बत करके सनम, पछताने की आदत मार गई।।

हम उनसे मुहब्बत करते रहे, रोते भी रहे हँसते भी रहे।
मैं तरके मुहब्बत कर न सका, गम खाने की आदत मार गई।।

वह आज खफा थे महफिल में, रिन्दों का दिल बहला न सके।
झुक-झुक के निगाहें उठती रहीं, दिल जलाने की आदत मार गई।।

वह कौन सी शै है, जो मुझको आदाबे जनू सिखलाती है।
होठों पे तबस्सुम की बिजली, मुस्काने की आदत मार गई।।

पीने की हबस बाकी न रही, पहुँचे जो वकील मैखाना हम।
साकी की नजर में डूब गये, मुझे पीने की आदत मार गई।।

❑ **मु० वकील अंसारी 'उसयावि'**
सहायक अवर निरीक्षक
रेलवे सुरक्षा बल,
पू० रेल० (कार०),
जमालपुर

मुक्तक

(१)

क्या ग़जब का रंग आया
आज के संसार में।
विद्वजन दर-दर भटकते
मूर्ख पाते मान हैं
फूल की तो क्यारियाँ सब
सूख गईं मधुमास में
नागफनियों की फसल
लहरा रही हर मास में।

(२)

धरा बेच देंगे, गगन बेच देंगे
सुमन बेच देंगे, चमन बेच देंगे
वतन के सिपाही अगर सो गये तुम
वतन के मसीहा वतन बेच देंगे।

हिन्दी के प्रति

(१)

हिन्दी हमारी जान है
पहचान है हिन्दी
यह कोटि-कोटि लोगों का
अरमान है हिन्दी
हिन्दी में करें काम हम
हिन्दी का रखे मान
यह जाति-धर्म-ज्ञान का इक
खान है हिन्दी।

(२)

जन-नायक है हिन्दी मेरी
अमर देश की भाषा।
कोटि-कोटि भारत-वासी की
एक अमर अभिलाषा।
राष्ट्र-गान है, राष्ट्र-मान है
सबकी एक दिलाशा
जन-जन में नित प्रेम बढ़ाती
प्रजातंत्र की आशा।

❑ **रामचन्द्र भ**
पूर्व कार्यालय अधी
पास अनुभाग, पू० रे० जमाल

इन्हें जानिए

हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा संचालित एक योजना है। इस योजना का मूल उद्देश्य है--राजभाषा का व्यापक प्रयोग-प्रसार करना। अतएव केन्द्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा के व्यापक एवम् समुचित प्रयोग-प्रसार के लिए अहिन्दी भाषी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण योजना चलाई गई है। इसके अन्तर्गत वैसे अहिन्दी भाषी कर्मचारी जिनका मातृभाषा हिन्दी नहीं है तथा जिन्होंने मैट्रिकुलेशन या इसके समकक्ष की परीक्षा हिन्दी माध्यम से पास नहीं किया है और जिन्होंने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त नहीं किया है, भाग ले सकते हैं। साथ ही इस प्रकार के प्रशिक्षण से सम्बन्धित परीक्षाओं को पास करने के लिए उन्हें प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिये जाते हैं :—

परीक्षाओं के नाम :-

प्रबोध :—	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 400/- रु० नकद पुरस्कार
	—60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	: प्रत्येक को 200/- रु० नकद पुरस्कार
	—55 प्रतिशत या इससे अधिक अंक परन्तु, 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 100/- रु० नकद पुरस्कार
प्रवीण :—	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 600/- रु० नकद पुरस्कार
	—60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 400/- रु० नकद पुरस्कार
	—55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर	: प्रत्येक को 200/- रु० नकद पुरस्कार
प्राज्ञ :—	70 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर —	: प्रत्येक को 600/- रु० नकद पुरस्कार
	—60 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 70 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर —	: प्रत्येक को 400/- रु० नकद पुरस्कार
	—55 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करते पर —	: प्रत्येक को 200/- रु० नकद पुरस्कार

हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन हिन्दी टंकण एवं हिन्दी आशुलिपि की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने पर मिलने पर प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिये जाते हैं। जो निम्न प्रकार से हैं :—

हिन्दी टंकण :—

—97 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 600/- रु० का नकद पुरस्कार
—95 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 97 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 400/- रु० का नकद पुरस्कार
--90 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर —	: प्रत्येक को 200/- रु० का नकद पुरस्कार

हिन्दी आशुलिपि :—

—95 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 600/- रु० का नकद पुरस्कार
—92 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 95 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर—	: प्रत्येक को 400/- रु० का नकद पुरस्कार
—88 प्रतिशत या इससे अधिक परन्तु 92 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने पर —	: प्रत्येक को 200/- रु० का नकद पुरस्कार

प्राधिकार :—रेलवे बोर्ड का पत्र सं०-हिन्दी/89/प्र. 13/7, दिनांक 27-3-95 एवं वित्त मंत्रालय (व्यय विभाग) का कार्यालय ज्ञापन तथा प्रशासनिक टिप्पणी सं०-22 (45)-ई 11 (ए)/94, दिनांक 10-1-1995

सरस्वती वन्दना

दे दे मधुराग हमें हे माँ ! जिस राग में बजती है वीणा।

स्वर तेरे जैसा लहराये, सुरांचल सुनते हर्षाये।
अनुपम वह रागिनी दे दे माँ ! सुनते विभोर जग हो जाये।।

सामवेद की हे जननी ! बस एक यही मुझको दे दे।
अपने चरणों की छाया में मधुमय मधुराग अमर कर दे।।

आलोक हमें ऐसा दे माँ ! आलोकित उर अन्तर हो जाये।
लौ ऐसी रमे पद - पंकज में, मन मंजू गान में खो जाये।।

इस धरा पर न ऐसा है कोई माँ ! जो तेरी रागिनी का कायल न हो।
उसी रागिनी में तेरी गरिमा को, सदा गाता रहूँ यह आशिष दो।।

एक चाह यही पलती दिल में संगीतमय सारा विश्व बने।
भारत महान फिर हो जाये, संगीत शिखर स्वर ऐसा बने।।

दे दे मधुराग हमें हे माँ ! जिस राग में बजती है वीणा।

❑ **ललित किशोर सिंह**
सम्प्रति सेवामुक्त लेखा सहायक,
पूर्व रेलवे, जमालपुर

नोवेल्टी प्रेस, मुंगेर